CHAPTER 24

HINDI

Doctoral Theses

01. अजीत कुमार
हिंदी के डायरी-साहित्य का आलोचात्मक अध्ययन।
निर्देशक : प्रो. पुरन चन्द टंडन
Th 23823

सारांश
(असत्यापित)

डायरी-साहित्य हिन्दी की एक नवीन अकाल्पनिक अन्य गद्य विधा है। हिन्दी में डायरी-लेखन का आरंभ हिन्दी की अन्य गद्य विधाओं जीवनी, आत्मकथा, संस्मरण आदि के साथ ही भारतेन्दुयुग में हुआ। 19 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध से हिन्दी में डायरी-लेखन के छिट-पुट प्रमाण दिखने लगते हैं। डायरी लेखन को नई दिशा और नया अर्थ मिला 'गाँधी-युग' (1918-1948) में; महात्मा गाँधी ने अपने समकालीन सभी साहित्यकारों, राजनीतिज्ञों और समाजसेवियों को आत्मनिरीक्षण के उद्देश्य से नियमित डायरी-लेखन के लिए प्रेरित-प्रोत्साहित किया। गाँधी का मानना था कि 'डायरी रखने मात्र की आदत ही हमें अनेक दोषों से बचा लेती है।' वास्तव में डायरी-लेखन, लेखक को अपने जीवन का पुनरावलोकन का अवसर देती है जिससे चरित्र के अनेक दोषों को सुधारने का अवसर मिल जाता है। यद्यपि डायरी-विधा का आगमन पश्चिम से हुआ लेकिन भारत में डायरी-साहित्य का विकास विदेशीपन के साथ न होकर भारतीय संस्कार और वातावरण में देशीपन के साथ हुआ। डायरी लेखक की अनायास रचना है इसमें लेखक अपनी दिनचर्या के अलावे समसामयिक घटनाओं और परिस्थितियों पर अपनी क्रिया-प्रतिक्रिया को तिथिवार दर्ज करता है। डायरी में 'कल्पना-तत्व' का अभाव पाया जाता है इसलिए इसमें संक्षिप्तता, सहजता, सरलता और स्वाभाविकता मिलती है। डायरी में शिल्प की कीमियागिरी और भाषाई अलंकारिता का अभाव होता है। प्रत्येक दिन की डायरी की विषय-वस्तु भिन्न-भिन्न होती है। डायरी में यात्रावृतांत, संस्मरण, आत्मकथा, निबंध, आलोचना इत्यादि विधओं का मिला-जुला रूप प्राप्त होता है इसलिए डायरी एक 'समग्र विधा' प्रतीत होती है। डायरी 'सर्जना का नेपथ्य' है। 'टुकड़ों में जीवन' है। 'टुकड़ों में साहित्य' है। 'टुड़कों में सर्जना' है।

विषय सूची

1. डायरी-साहित्य : सैद्धांतिक विवेचन 2. डायरी-साहित्य और अन्य गद्य अवधाएँ 3. डायरी-साहित्य की अवकास-यात्रा 4. डायरी-साहित्य : संवेदना पक्ष 5. डायरी-साहित्य : शिल्प-संरचना उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

02. अमित

मोहन राकेश और सुरेन्द्र वर्मा के नाटकों का तुलनात्मक अध्ययन।

निर्देशक : डॉ. ममता

Th 23815

सारांश

(असत्यापित)

Mohan Rakesh Aur Surendra Verma Natakkar Hone Ke Sath Sath Ek Rang-Chintak Ke Roop Me Bhi Samne Aate Hain. Mohan Rakesh Sahitya Srajan Ke Liye Anterdwand Ko Mahatwapurn Mante Hai To Wahi Surendra Verma Akelepan Ki Niyati Ko Sahitya Srajan Ka Anivariye Ang Mante Hai. Moahn Rakesh Ke Ek Ek Shabd Ka Sarokar Vartman Se Hai To Surendra Verma Ka Udeshya Bhi Etihasikta Ke Madhyam Se Vartman Ko Abhivyanjit Karna Raha Hai. Dono Hi Rachnakaro Ki Pravrti Natya Sahitya Ke Madhyam Se Swanubhuti Ko Abhivyakt Karna Hai, Jaha Mohan Rakesh Ke Natkon Me Bhawnatmakta Ki Pradhanta Hai, Wahi Surendra Verma Ke Sahitya Me Bhawnatmakta Ka Aawran Audhe Vaicharikta Pramukh Hai. Mohan Rakesh Ka Sahitya Bhartiya Vichardhara Ka Mila-Jula Roop Hai Aur Surendra Verma Ke Patro Per Bhartiya Sanskriti Se Kahin Jyada Aadhunikta Evam Uttar Aadhunikta Ka Prabhav Dikhyi Padta Hai. Etihasikta Ki Hi Bhanti Dono Rachnakaro Ne Apne Natak Ka Aadhar Mahanagariye Parivesh Ko Bhi Banaya Hai, Jisme Mohan Rakesh Ke Patra Bhartiya Sanskriti Aur Aadhunik Parivesh Ke Beech Jhhulte Nazar Aate Hai To Wahi Surendra Verma Ke Natkon Ke Patra Aadhunikta Se Uttar Aadhunikta Ka Safar Tay Karte Hain. Mohan Rakesh Aur Surendra Verma Ki Natya Bhasha Rangmanch Ke Anukool Bhasha Hai, Mohan Rakesh Ki Bhasha Me Sampreshniyeta Adhik Hai, Vah Pratek Varg Ke Vyakti Ke Liye Hai Kintu Surendra Verma Ke Natkon Ki Bhasha Drooh Evam Nishchit Varg Tak Hi Simit Hai. Mohan Rakesh Kam Se Kam Takniki Upkarno Ki Sahayta Lene Ki Baat Karte Hai, Jisme Natak Ki Bhawanatmakta Aur Molikta Nhi Marti Sath Hi Sath Natakkar Ki Bhumika Ka Mahatwa Bhi Bad Jata Hai, Jabki Surendra Verma Ko Aadhunik Ranmanchiye Prodhoyik Yuktiyo Ke Prayog Se Koi Gurej Nhi Hai.

विषय सूची

1. समकालीन परिदृश्य और हिन्दी नाटक 2. इतिहास बोध : मोहन राकेश और सुरेन्द्र वर्मा के नाटकों का तुलनात्मक अध्ययन 3. महानगरीय बोघ : मोहन राकेश और सुरेन्द्र वर्मा के नाटकों का तुलनात्मक अध्ययन 4. स्त्री-पुरूष सम्बन्ध : मोहन राकेश और सुरेन्द्र वर्मा के नाटकों का तुलनात्मक अध्ययन 5. नाट्य साहित्य चिन्तनः मोहन राकेश और सुरेन्द्र वर्मा के नाटकों का तुलनात्मक अध्ययन 6. नाट्य भाषा : मोहन राकेश और सुरेन्द्र वर्मा के नाटकों का तुलनात्मक अध्ययन रंगमंचीय दृष्टि : मोहन राकेश और सुरेन्द्र वर्मा के नाटकों का तुलनात्मक अध्ययन।उपसंहार। परिशिष्ट।

03. अमित रंजन

सामाजिक-राजनीतिक संरचना का बदलता स्वरूप और हिंदी उपन्यास (1980 से 2010 तक)

निर्देशक : डॉ. रसाल सिंह

Th 23811

सारांश

(असत्यापित)

प्रेमचंद-पूर्व हिंदी उपन्यास सुधारवादी दृष्टिकोण से युक्त पथप्रर्दशक तथा मार्गदर्शक की भूमिका में है और समाज के यथार्थ-चित्रण के बजाय आदर्श को चित्रित करते दिखलाई देते हैं वहीँ प्रेमचंद-युगीन उपन्यास में गांधीवादी, क्रांतिकारी सभी प्रकार के राजनीतिक विचारधारा की अभिव्यक्ति है। प्रेमचंदोत्तर उपन्यास में मोहभंग, स्त्री-पुरुष संबंधों में आया परिवर्तन, शहरीकरण आदि की सुन्दर अभिव्यक्ति है। स्त्री-अस्मिता के उभार के फलस्वरूप स्त्रियों से जुड़े मुद्दे यथा घर एवं कार्यस्थल पर यौन-शोषण,स्त्रियों से जुडी बीमारियाँ,वेश्यावृति आदि का चित्रण इस दौर के उपन्यासों में किया गया है। इसके अतिरिक्त पुरुष लेखकों द्वारा भी स्त्री-विषयक उपन्यासों में संवेदना के स्वरुप में अंतर आया। 'यौनिकता' को अतिशय महत्व देना इस निष्कर्ष की सीमा है। दलितों का शिक्षा के प्रति गहरा रूझान जैसा सामाजिक सत्य इस दौरके दलित-विमर्श के उपन्यासों के कथानक में अनुस्यूत होता दिखलाई पड़ता है। 'छप्पर' उपन्यास का दलित-पात्र सुक्खा अपना सर्वस्व दाँव पर लगा कर भी अपने पुत्र चंदन को पढ़ने के लिए शहर भेजता है। मंडल कमीशन की अनुशंसाओं को लागू किया जाना एवं इसकी प्रतिक्रिया, हरिजन एक्ट, शादी-ब्याह में दलित जाति के दूल्हे का घोड़ी पर चढ़कर नहीं जा पाना आदि का चित्रण दलित अस्मिता के उभार का परिणाम है। बीसवीं सदी का आखिरी दशक सामाजिक, राजनीतिक, प्रत्येक दृष्टिकोण से उथल-पुथल एवं परिवर्तनों से भरा रहा है। मंडल आयोग,कमंडल एवं मंडल की राजनीति, बाबरी विध्वंस, कश्मीर में आतंकवाद आदि जैसी घटनाओं की अभिव्यक्ति इस दौर में लिखे गए उपन्यासों में हुई। भूमंडलीकरण को खलनायक के रूप में प्रस्तुत करना विवेच्य अवधि में लिखे गये उपन्यासों की सीमा है। समग्र रूप से हम कह सकते हैं कि विशेष रूप से उन्नीस सौ अस्सी के बाद लिखे गए हिन्दी उपन्यासों में भारतीय समाज एवं राजनीति संरचना में आया छोटे-से-छोटा परिवर्तन चित्रित हुआ है। शायद ही समाज का कोई वर्ग ऐसा रहा हो जो इसके चित्रण से छूट गया हो।

विषय सूची

1. नौवें दशक के पूर्व भारत की सामाजिक-राजनीतिक संरचना एवं हिंदी उपन्यास 2. स्त्री-अस्मिता का उदय, विकास और हिंदी उपन्यास पर पड़ा प्रभाव 3. दलित-अस्मिता : उद्य, विकास और हिंदी उपन्यास पर पड़ा प्रभाव 4. आखिरी दशक बदलता भारत और हिंदी उपन्यास 5. नयी सदी में सामाजिक-राजनीतिक संरचना एवं हिंदी उपन्यास।उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

04. अर्चना

सामाजिकता के प्रश्न और हिंदी का महिला नाट्य-लेखन।

निर्देशक : डॉ. राज भारद्वाज

Th 23808

सारांश

(असत्यापित)

सामाजिकता के प्रश्न देश काल और परिस्थिति के अनुसार बदलते रहते हैं। रचनाकार बदलती देश काल परिस्थिति के अनुसार उभरने वाले नए प्रश्नों और सरोकारों को अपनी रचना के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। इसी संदर्भ में "सामाजिकता के प्रश्न और हिंदी का महिला नाट्य-लेखन" विषय पर मेरा शोधकार्य प्रस्तुत है। प्रस्तुत शोधकार्य के अंतर्गत मुख्य रूप से महिला नाट्य-लेखन में व्यक्त सामाजिकता के विभिन्न प्रश्नों एवं समस्याओं का अध्ययन विश्लेषण किया गया है। इसके लिए शोधकार्य को सामाजिकता के प्रश्नए महिला नाट्य लेखन का विकासए महिला नाट्य लेखन के विविध रूपए विमर्शों के संदर्भ में महिला नाट्य-लेखनए सामाजिकता के प्रश्न और महिला नाट्य लेखन तथा महिला नाट्य लेखन की भाषा आदि का विश्लेषण किया गया है हिंदी महिला नाट्य लेखन यद्यपि अपने आकर और संख्या में सीमित होने के बावजूद मंचियता और सामाजिक विषयों के प्रति अपने सरोकार को लेकर काफी महत्वपूर्ण हैं. महिला नाटककारों की रचना दृष्टि स्वयं तक सीमित नहीं है उन्होने स्त्री पुरुष सम्बन्ध होंए स्त्री जीवन का प्रश्न होए स्त्री की अस्मिता ए सांस्कृतिक समस्याएँए समसामयिक राजनीतिक और ग्रामीण जीवन के प्रश्न हों एअल्पसंख्यक और आतंकवाद की समस्या होएपितृसत्ता के साथ टकराहट या फिर स्त्री की मुक्तिकामी चेतना के प्रश्न हों या फिर ऐतिहासिक पौराणिक कथावास्तु के सन्दर्भ में समकालीन जीवन संबंधों और समस्याओं को समझने और मूल्यांकन करने के प्रश्न आदि पर भरपूर लेखन किया है।

विषय सूची

1. सामाजिकता के प्रश्न : विविध पहलू 2. हिन्दी का महिला-लेखनः एक विकास-यात्रा 3. सामाजिकता के प्रश्न और नाट्य-लेखन के विविध रूप एवं हिन्दी का महिला नाट्य-लेखन 4. समकालीन विमर्शों के संदर्भ में हिन्दी का महिला नाट्य-लेखन 5.सामाजिकता के प्रश्न और हिन्दी का महिला नाट्य-लेखन 6. सामाजिकता के प्रश्न और हिन्दी के महिला नाट्य-लेखन में प्रयुक्त स्त्री-भाषा।उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

05. आरती

हरिशंकर परसाई और शरद जोशी के साहित्य में युगबोध।

निर्देशक : डॉ. राज भारद्वाज

Th 23835

विषय सूची

1. युगबोध की अवधारणा 2. हरिशंकर परसाई और शरद जोशी का परिवेश और रचनाधर्म 3. हरिशंकर परसाई और शरद जोशी के साहित्य में युगबोध : सामाजिक संदर्भ 4. हरिशंकर परसाई और शरद जोशी के साहित्य में युगबोध : राजनीतिक-आर्थिक संदर्भ 5. हरिशंकर परसाई और शरद जोशी के साहित्य में युगबोध : साहित्यि-सांस्कृतिक संदर्भ 6. युगबोध का संदर्भ और अभिव्यक्ति-पक्ष। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

06. गुप्ता (विजय कुमार)
प्रेमचंद के अभिग्रहण का इतिहास और हिंदी आलोचना के बदलते प्रतिमान।
निर्देशक : डॉ. विनोद तिवारी
Th 23810

सारांश
(असत्यापित)

प्रस्तुत शोध-विषय श्प्रेमचंद के अभिग्रहण का इतिहास और हिंदी आलोचना के बदलते प्रतिमानश के अंतर्गत प्रेमचंद के समय मेंए छायावादोत्तर दौर में और समकालीन विमर्शों के दौर में पाठकों एवं आलोचकों ने प्रेमचंद को किस तरह ग्रहण किया है इस बात को समझने का प्रयास किया गया है अभिग्रहण सिद्दांत पाठकवादी प्रतिक्रिया सिद्दांत के अंतर्गत होते हुए उससे अलग है यह एक आन्दोलन के रूप में उभरा और इसने ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में किसी पाठ को उसके पूरे सौन्दर्यबोध के साथ ग्रहण करने पर जोर दिया. हालाँकि भारतीय काव्यशास्त्र में पाठक या दर्शक की दृष्टि से साहित्य के विश्लेषण पर चर्चा की गई हैए किन्तु इसे एक सिद्दांत के रूप में स्थापित नहीं किया गया है प्रेमचंद ने अपने समय में साहित्य को व्यापक पाठक वर्ग से जोड़ा था और उनके रूचि का परिष्कार किया था. इसमें प्रेमचंद के रचनाओं की सामाजिक-सांस्कृतिक गढ़नए पात्रों के चयन की अहम भूमिका थी. प्रेमचंद अपने समय में साहित्यिक विधाए विषय और पाठकों के स्तर पर नए प्रयोग कर रहे थे. छायावादी कविता केन्द्रित प्रवृति और हिंदी आलोचना में पाठको के प्रति उपेक्षा भाव होने के कारण प्रेमचंद को उनके समय में सही ऐतिहासिक और सामाजिक परिप्रेक्ष्य में अभिग्रहण नहीं किया गया और उनके साहित्य को लेकर तमाम वाद-विवाद हुए छायावादोत्तर दौर में प्रगतिशील आलोचना का विकास होने पर हिंदी आलोचकों मसलन रामविलास शर्माए नलिनविलोचन शर्माए नामवर सिंह शिवकुमार मिश्र आदि ने प्रेमचंद को सही सामाजिक और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में विश्लेषित किया. कुछ दलित चिंतको जैसे कँवल भारतीए तेज सिंह को छोड़करए दलित विमर्शकारों ने सही ऐतिहासिक और सामाजिक परिप्रेक्ष्य में प्रेमचंद का अभिग्रहण नहीं किया है और उनपर कई आरोप लगाए हैं. स्त्री विमर्शकारों ने कुछएक आपत्तियों के साथ प्रेमचंद को सही सन्दर्भ में ग्रहण किया है. जैसे-जैसे साहित्य और समाज बदल रहा है प्रेमचंद के अभिग्रहण की नई दिशाएं सामने आ रहीं हैं

विषय सूची

1. अभिग्रहण सिद्धांत : और विचार और अवधारणा 2. प्रेमचंद की रचनाएँ, पात्र और पाठक समुदाय 3. प्रेमचंद के समय में उनका आलोचनात्म्क अभिग्रहण 4. छायावादोत्तर दौर में प्रेमचंद का आलोचनात्मक अभिग्रहण 5. समकालीन विमर्शों के दौर में प्रेमचंद का अभिग्रहण। उपसंहार। परिशिष्ट। ग्रंथानुक्रमणिका।

07. गुप्ता (विनय कुमार)
भारतेंदुयुगीनभाषा-चिंतन की सामाजिक-राजनीतिक समस्याएँ (विशेष संदर्भ : बालकृष्ण भट्ट)
निर्देशक : प्रो. मोहन
Th 23824

सारांश
(असत्यापित)

शोध-प्रबंध आधुनिक हिंदी साहित्य के स्वरूप निर्माण,विकास और उसके भाषा चिंतन से संबंधित है| इस शोध कार्य में मैंने भारतेन्दुयुगीन रचनाकारों के साहित्यिक योगदान और उनके भाषा चिंतन का तुलनात्मक अध्ययन किया है| जिसप्रकार 1857 की स्वाधीनता संघर्ष की लड़ाई बहादुर सैनिकों द्वारा अंग्रेजों के खिलाफ़ लड़ी गयी थी उसीप्रकार भारतेंदु युग के साहित्यकारों ने आंतरिक बुराइयों एवं बाहरी शोषणकारी नीतिओं के खिलाफ़ लड़ाई लड़ी|स्वाधीनता संघर्ष की चेतना का प्रचार प्रसार के लिए हिंदी भाषा और देवनागरी लिपि की प्रबल भूमिका थी | भारतेंदु युग भाषा-चिंतन और चिंतकों में हिंदी-उर्दू विवाद, नागरी- फ़ारसी लिपि विवाद ,ब्रजभाषा और खड़ी बोली विवाद प्रमुख था|विवाद उत्पन्न होने का कारण था सामाजिक समीकरण में परिवर्तन| बालकृष्ण भट्ट भाषा चिंतन में नागरी अक्षर और हिंदी भाषा को प्रमुख मानते हैं जबकि उर्दू , फ़ारसी समर्थक इसका विरोध करते है| बालकृष्ण भट्ट ने हिंदी भाषा के माध्यम से एक जातीय राष्ट्र की परिकल्पना की हैं |

विषय सूची

1. भारतेंदुयुगीन परिवेश और जन चेतना 2. 19वीं शताब्दी में हिंदी भाषा-चिंतन 3. बालकृष्ण भट्ट का भाषा-चिंतन 4. बालकृष्ण भट्ट के भाषा-चिंतन का सामाजिक-राजनीतिक आधार 5. बालकृष्ण भट्ट की साहित्यिक एवं भाषिक आलोचना।उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

08. चन्द्रकला
मुक्तिबोध और रघुवीर सहाय के काव्य की राजनीतिक चेतना का तुलनात्मक अध्ययन।
निर्देशक : डॉ. राकेश कुमार
Th 23836

सारांश
(असत्यापित)

राजनीतिक चेतना साहित्य का महत्वपूर्ण पहलू है जो युगीन परिप्रेक्ष्य को सम्पूर्णता में व्यक्त करता है। समसामयिक वास्तविकता को प्रासंगिकता में उभरता है। राजनीतिक गिरावट ओर वैयक्तिक महत्वकांकक्षा ने वर्तमान दौर में सत्ता लोलुपता की नई कविता में प्रखर अभिव्यक्ति दी है। आधुनिक कविता में मुक्तिबोध एवं रघुवीर सहाय का सम्बंध हिंदी कविता की मानवीय संवेदना और लोक जीवन के आग्रही कवियों की उस परंपरा से जोड़ा जाता है जो निराला नागार्जुन केदारनाथ अग्रवाल सर्वेश्वर धूमिल आदि के काव्य में अक्षुण्ण भाव से प्रभावित हो रही हैं।मुक्तिबोध एवं रघुवीर सहाय का काव्य उस साक्ष्य को प्रस्तुत करता हैं।जो कवि के अपने परिवेश से संपृक्त तथा जिंदगी की चुनौतियों को स्वीकार करने की मानसिकता से निर्मित है। रचनाकार अपने युगबोधए परिस्थितियों से जूझते हुए मंथन करते हुएए नवीन विचारबोध और साहित्यिक दृष्टि दर्शाता है लेकिन मुक्तिबोध और रघुवीर सहाय शीर्षस्थ कवियों में से है जिन्होंने नयी कविता के दौर में अंतर्वस्तुए व भाषा के स्तर पर बहुत कुछ नया करने की कोशिश की। यर्थाथवादी दृष्टिकोण के अंतर्गत शिल्प के औचित्य से रची गई मुक्तिबोध की कविताएं फैंटेसी से घिरी होने के बावजूद जटिल अपरिहार्य राजनीति स्थिति को चित्रित करती है वही साठोत्तर कविता में रघुवीर सहाय जिन्होंने वस्तु के साथ-साथ भाषा को भी तोड़ा है। उनकी काव्य भाषा बिना किसी लागलपेट के सीधे राजनीतिक स्थिति की क्रूरता को मार्मिक रूप में अभिव्यक्त देती है। दोनों ही कवियों में कई धरातलों पर पर्याप्त समानताएं परिलक्षित होती हैं दोनों ही कवि एक ही युग (20वीशताब्दी) में दस वर्ष के अंतराल के साथ जन्मे दोनों ही कवियों ने अपने समय की राजनीतिक यर्थाथ को अभिव्यक्ति दी ।दोनों ही कवियों में जनसाधारण की पीड़ा और राजनीतिक चेतना का स्वर देखने को मिलता हैं। मुक्तिबोध जहाँ मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित थे वही रघुवीर सहाय समाजवादी विचारधारा से।किंतु ये प्रभाव अंधानुकरण के रूप में नहीं रहा।

विषय सूची

1. साहित्य और समाज के संदर्भ में चेतना की भूमिका 2. राजनीतिक चेतना और आधुनिक हिंदी कविता 3. मुक्तिबोध के काव्य में सामाजिक-राजनीतिक सरोकार 4. रघुवीर सहाय के काव्य में सामाजिक-राजनीति सरोकार 5. मुक्तिबोध और रघुवीर सहाय के काव्य में राजनीतिक चेतना का तुलनात्मक अध्ययन।उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

09. चौधरी (राजेश)
हिन्दी गीति-नाट्य की रंगमंचीय संरचना।
निर्देशक : प्रो. मोहन
Th 23843

विषय सूची

1. हिन्दी गीति-नाट्य उद्‌भव एवं विकास 2. गीति-नाट्य : रंगमंचीय संरचना 3.गीति-नाट्य : भावभिव्यंजना व चिन्तन पक्ष 4. गीति-नाट्य विधागत वैशिष्ट्य। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

10. जगदीश सौरभ

राहुल सांकृत्यायन के रचनात्मक साहित्य में सांस्कृतिक चिंतन।

निर्देशक : प्रो. अनिल राय

Th 23842

सारांश

(असत्यापित)

राहुल सांकृत्यायन बीसवीं सदी के प्रमुख रचनाकार हैं जिनके सम्पूर्ण लेखन में एक वैश्विक सांस्कृतिक चेतना के निर्माण का सपना दिखाई देता है. उनके लेखन की विविध विधाओं में साहित्य, संस्कृति, इतिहास, पुरातत्व, दर्शन और घुमक्कड़ी इत्यादि क्षेत्रों के परिपक्व रूप के दर्शन मिलते हैं. भारतीय नवजागरण से लेकर आज़ादी के आन्दोलन तक की भारतीय सांस्कृतिक चेतना को उन्होंने जी भर के रचा और जिया है. प्रस्तुत शोध प्रबंध में मैंने राहुल सांकृत्यायन के रचनात्मक साहित्य में उन बिन्दुओं को तलाश करने और उनपर विस्तार से बातचीत करने की कोशिश की है जो स्थापित पुरोगामी भारतीय चिंतनधारा के विपरीत और सामानांतर हैं. राहुल का सांस्कृतिक चिंतन अपनी सम्पूर्णता में बुद्‌ध, चार्वाक, कबीर, फुले, पेरियार और आंबेडकर के चिंतन के सामानांतर ही विकसित और स्थापित होता है. ऐसा चिंतन जिसका दायरा सिर्फ औपनिवेशिक गुलामी को दूर करने या तथाकथित विदेशी शत्रुओं को मार भगाने तक सीमित नहीं, अपितु समाज और देश की आतंरिक दिक्कतों और परेशानियों से पार पाने में है. मार्क्सवादी विचार से संपृक्त यह चिंतन अपनी अंतिम परिणति में देश को जातीय घृणा, धार्मिक कट्‌टरता, साम्प्रदायिक उन्माद और अन्धविश्वास से मुक्ति दिलाते हुए दलितों-स्त्रियों सहित वंचित तबके के लिए सामाजिक न्याय की प्रतिबद्‌धता सुनिश्चित करना चाहता है. राहुल के रचनात्मक साहित्य में उनके सांस्कृतिक चिंतन की सबसे ख़ास बात है उसकी तरलता यानि वैचारिक विकास और समृद्‌धि के लिए तत्परता. किसी भी तरह के पंडिताऊपन और कठमुल्लेपन से लड़ता यह योद्‌धा बुद्‌ध की तरह ज्ञान की नाव पर सवार होकर नदी पार करना चाहता है, न कि उसको कंधे पर उठाकर ढोना. सनातनी ब्राह्मण से आर्यसमाजी, फिर बुद्‌धिज्म से मार्क्सवादी विचारों तक की यह यात्रा उनकी सभी रचनाओं और उसके उद्‌देश्यों में साफ़ झलकती है.

विषय सूची

1. संस्कृति की संकल्पना और सरोकार 2. राहुल सांकृत्यायन और उनका रचनात्मक साहित्य 3. राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया और राहुल का सांस्कृतिक चिंतन 4. भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य

औरराहुल सांकृत्यायन का सांस्कृतिक चिंतन 5. समकालीन सांस्कृतिक परिदृश्य और राहुल सांकृत्यायन चिंतन की प्रासंगिकता।उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

11. ठाकुर (ज्योति)
प्रगतिवादी समीक्षा की कसौटियाँ और मुक्तिबोध की समीक्षा दृष्टि।
निर्देशक : प्रो. अनिल राय
Th 23809

सारांश
(असत्यापित)

गजानन माधव मुक्तिबोध आधुनिक हिंदी साहित्य के पहले ऐसे रचनाकार-समीक्षक हैं जिन्होंने नई कविता और समीक्षा के आत्मबद्ध स्वरूप का संबंध शीतयुद्धकालीन राजनीति और लेखकों की पूंजीवादी मानसिकता से जोड़ा है। ृराजनीतिक चेतना और ृराजनीतिक मतवाद दो अलग चीजे हैं। किसी राजनीतिक मतवाद को ृवैचारिकी' या दर्शन' का नाम देकर यदि रचनाकार अनुभूत सत्य की प्रामाणिकता को साहित्य की कसौटी मानने लगता है तो यह मुक्तिबोध के लिए किसी फ्रॉड' से अधिक कुछ भी नहीं है। व्यक्ति-स्वातंत्र्य या लघु-मानव' की अवधारणा पूंजीवादी समाज के लक्षण हैं जिसका व्यापक मनुष्य-सत्य से कोई लेना-देना नहीं है। गजानन माधव मुक्तिबोध ने यह स्थापित किया कि साहित्यकार अपने अतीत से संचित संस्कार एवं मूल्य एवं निजी अनुभूति के साथ-साथ वर्तमान परिवेश की परिघटनागत विशेषताओं से भी व्यापक रूप से प्रभावित होता है। इसलिए साहित्य-रचना आत्मनिष्ठ कर्म तो हो सकता है किंतु व्यक्तिबद्ध कर्म नहीं हो सकता है। प्रगतिवादी समीक्षक के रूप में गजानन माधव मुक्तिबोध ने साहित्य के वर्गीय चरित्र पर प्रकाश डाला। मुक्तिबोध के अनुसार साहित्य एक कला है जिसमें एक वर्ग विशेष अपनी ऐतिहासिक और सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप अपने प्रधान विषय चुनता है। इस विषय-निर्वाचन में युग-विशेष के जीवन-मूल्य मानव-सबंध और विश्व-दृष्टि प्रतिबिम्बित होते हैं। कवि तथा अन्य कलाकार केवल इन विषयों का मूर्तिकरण ही अपनी रचनाओं में करते हैं। इन निष्कर्षों के आलोक में साहित्यकार-समीक्षक गजानन माधव मुक्तिबोध की समीक्षा-दृष्टि के कतिपय ऐसे पक्षों को रेखांकित करना ही मेरे मेरे शोध का उद्येश्य है जो उन्हें शेष प्रगतिवादी समीक्षको से विशिष्ट बनाता है। मुक्तिबोध का काव्य विवेक और जीवन विवेक दोनों एकमेव होकर सत् चित् वेदना भास्कर स्वरूप में अपने दौर और आने वाले साहित्य-चितंकों के लिए शोध और विमर्श के असीम संभावना क्षेत्र का निर्माण करते हैं। मेरा यह शोध इस दिशा में हिंदी में अब तक हुए और संप्रति हो रहे चितंन से संबंधित है।

विषय सूची

1. प्रगतिवादी समीक्षा का स्वरूप और कसौटियाँ 2. प्रगतिवादी समीक्षकों का आलोचनात्मक चिन्तन 3. मुक्तिबोध की समीक्षा-दृष्टि 4. मुक्तिबोध का समीक्षा चिन्तन 5. मुक्तिबोध के समीक्षा-कर्म का वैशिष्ट्य।उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

12. त्रिपाठी (गरिमा)

प्रगतिशील कविता में लोक संस्कृति : नागार्जुन, त्रिलोचन एवं केदार की कविताओं के संदर्भ में।

निर्देशक : डॉ रमा

Th 24235

सारांश

(सत्यापित)

प्रगतिशील कविता पीड़ित वर्ग की पक्षधर बनकर मनुष्य को आगे बढ़ाने के प्रयास के कारण साहित्य की महत्वपूर्ण काव्यधारा बनीं।20वीं सदी के प्रारंभिक दशकों में हिंदी साहित्य विभिन्न विचार धाराओं से प्रभावित हुआ।इन विचारधाराओं में एक सन 1917 ईसवी की रूस की क्रांति के फलस्वरूप भारतीय चेतना में स्थान प्राप्त कर चुकी थी।तत्कालीन राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियां किस प्रकार से भारत की सामाजिक,आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था को प्रभावित करती है उसी के फलस्वरूप हम देखते हैं कि मार्क्सवाद,समाजवाद और मानवतावाद जैसे तमाम वादों का उदय होता है। कार्लमार्क्स के सिद्धांतों को प्रगतिवाद श्रद्धा की दृष्टि से देखता है।प्रगतिशील धारा जनसाधारण के दुख-दर्द से निर्मित काव्यधारा है।सन 1936 ईसवी में साहित्य सम्राट प्रेमचन्द ने प्रगतिशील लेखक संघ की अध्यक्षता की।प्रगतिशील कवियों में नागार्जुन, त्रिलोचन एवम केदार की कविताएं समाज में व्याप्त रूढ़ियों पर चोट करती हैं।इन तीनो कवियों की कविताओं में लोक संस्कृति में प्रचलित रीति रिवाज,व्रत,पर्व,त्योहार आदि का वर्णन मिलता है। लोकसंस्कृति में लोक के खान-पान,वेशभूषा,रहन सहन,बोली बानी आदि का उल्लेख मिलता है।इसके साथ ही पेड़-पौधे, पोखर-तालाब आदि प्राकृतिक तत्वों से जन के रागात्मक सम्बन्ध जुड़े हुए हैं।नागार्जुन,त्रिलोचन एवम केदार की कविताओं में कहीं सीधे विषय वस्तु के वर्णन द्वारा,तो कहीं उपमानों,रूपकों और मिथकों के माध्यम से लोकसंस्कृति को चित्रित किया गया है।नागार्जुन की 'हरिजनगाथा'में भाग्यवाद,'अच्छत छीट रहे जंगल में'में वैवाहिक संस्कार,शपथ,तर्पण,बड़ी फिकर है तुम्हारी'में अंत्येष्टि संस्कार,विजयी के वंशधर में पुरानी परम्पराओं को त्याग कर,सार्थक और उपयोगी परम्पराओं को अपनाने की बात की गई है।प्रगतिशील कविता में माटी की सोंधी महक,बसन्ती हवा का सरल सहज स्पर्श तथा ग्रामीण प्राकृतिक जीवन का मोहक सौंदर्य विद्यमान है।

विषय सूची

1. लोक संस्कृति : अर्थ एवं स्वरूप 2. हिन्दी कविता और प्रगतिवाद 3. नागार्जुन की कविताओं में लोक संस्कृति-विविध पक्ष 4. त्रिलोचन के काव्य में लोक संस्कृति-विविध पक्ष 5. केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में लोक संस्कृति-विविध पक्ष। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

13. प्रत्यय अमृत

स्वातंत्र्योत्तर (1950-80) हिंदी कविता की प्रतिमान संबंधी बहसों का मूल्यांकन।

निर्देशिका : प्रो. सुधा सिंह

Th 23819

सारांश
(असत्यापित)

मेरे शोध का विषय स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता की प्रतिमान संबंधी बहसों का मूल्यांकन है। इसके अंतर्गत मैंने नयी कविता के कवि-आलोचकों के साहित्यिक प्रतिमान निर्धारण को लेकर वैचारिक बहसों का मूल्यांकन करने का प्रयास किया है।

विषय सूची

1. काव्य संबंधी नयी धारणा का उदय तथा सप्तक काव्य परंपरा 2. नयी कविता आंदोलन तथा आलोचकों एवं रचनाकारों की कविता संबंधी नयी बहसें 3. मूल्यों का टकराव तथा छठे दशक के आलोचकों एवं रचाकारों की वैचारिक स्थिति पर उसका प्रभाव 4. मोहभंग तथा सातवें दशक के कवियों की वैचारिक पृष्ठभूमि 5. सातवें-आठवें दशक के आलोचकों एवं रचनाकारों की काव्य विषयक दृष्टि 6. काव्य के नये प्रतिमान पर्याप्तता तथा अपर्याप्तता का प्रश्न। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

14. पवन कुमार
धूमिल और लीलाधर जगूड़ी की कविताओं में समकालीन वर्गीय संरचना का तुलनात्मक अध्ययन।
निर्देशिका : प्रों. सुधा सिंह
Th 23804

सारांश
(असत्यापित)

प्रस्तुत शोध "धूमिल और लीलाधर जगूड़ी की कविताओं में समकालीन वर्गीय संरचना का तुलनात्मक अध्ययन" आम आदमी द्वरा झेले जा रहे नरक के भूगोल और उसकी चुनोतियों से उभरने में एक सशक्त भूमिका का निर्वहन करता है धूमिल तथा जगूड़ी की क्रांतिधर्मी चेतना जिन अमानुषिक विभिषिकाओं का परिणाम थी उसका आधार आर्थिक असमानता ही है| धूमिल और जगूड़ी परम्परागत संरचना को ख़त्म कर उसे सर्वजन के लिए सुलभ बनाने के पक्षधर हैं| असल में धूमिल तथा जगूड़ी ने उन शोषकीय अमानुषिक परम्पराओं की बखिया उधेडी हैं जिन्होंने सामान्य व्यक्तियों के आत्मसम्मान को कुचल कर उसे असहाय बना दिया| प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य समाज में निहित आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक असामनता की प्रष्ठभूमि का यथार्थ अंकन प्रस्तुत करना है जिसके कारण आम जन विभिन्न प्रकार की समस्याओं से प्रतिदिन जूझता है| धूमिल तथा जगूड़ी प्रारम्भ से ही श्रमजीवी और सर्वहारा वर्ग से जुड़ी संवेदनाओं के कवि रहे हैं| पूंजीवाद और सामंती ताकतों के खिलाफ उन्होंने क्रांति का ऐसा विगुल बजाय जिसकी आवाज इस शोध प्रबंध में सहजता से सुनी जा सकती है |

विषय सूची

1. वर्ग की अवधारणा एवं स्वरूप 2. समकालीन कविता संदर्भ आयाम और प्रकृति 3. धूमिल तथा जगूड़ी की रचनाधर्मिता का स्वरूप 4. धूमिल तथा लीलाधर जगूड़ीकी कविताओं में वर्गीय संरचना 5. धूमिल तथा जगूड़ी के शिल्पगत प्रयोग।उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

15. पाण्डेय (अरुण कुमार)
धर्म-सत्ता और राष्ट्रवाद के संदर्भ में समकालीन हिन्दी उपन्यासों का अध्ययन : 1980 से अब तक।
निर्देशक : डॉ. अल्पना मिश्र
Th 23839

सारांश
(असत्यापित)

समकालीन हिंदी उपन्यासों में व्यक्त 'धर्म-सत्ता और राष्ट्रवाद' के स्वरूप का अध्ययन करते हुए हम देखते हैं कि वैश्विक स्तर पर राष्ट्रवाद के उदय की प्रक्रिया और परिस्थितियाँ भिन्न-भिन्न रही हैं। भारत में राष्ट्रवाद का प्रसार नवजागरण की चेतना का परिणाम था किन्तु भारतीय राष्ट्रवाद की यह विडम्बना रही कि उसका उदय ही खंडित रूप में हुआ। उपन्यासों का विश्लेषण करते हुए हम देखते हैं कि राष्ट्रवाद के उग्र रूप के उभार का पूरा मामला एक-दूसरे के प्रति तीव्र घृणा के प्रचार पर टिका है। धर्म और संस्कृति का घालमेल करने वाले भाषा को भी धर्म से जोड़कर प्रस्तुत करते हैं। भारत में हिंदी-उर्दू विवाद और दोनों को दो अलग भाषाओं के रूप में देखने का आग्रह ऐसे ही घालमेल का परिणाम है शोध में चयनित उपन्यास मुखड़ा क्या देखे, बशारत मंजिल, और मैं बोरिशाइल्ला इत्यादि एक तरफ समाज के भीतर व्याप्त भाषाई अलगाववाद के उदाहरण पेश करते हैं तो दूसरी तरफ भाषाई अलगाववाद की राजनीति को चिन्हित करते हुए उसका प्रतिरोध भी करते हैं। सांप्रदायिकता की राजनीति करने वाले अपने राजनीतिक एजेंडे इस लक्ष्य के साथ निर्धारित करते हैं कि वे वर्चस्व की स्थिति में बने रहें। उपन्यासों में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं जिनसे स्पष्ट होता है कि सांप्रदायिक दंगों में राज्य का पक्ष तटस्थ नही रहता। भूमंडलीकरण और उदारवाद की नीतिओं और धर्म और बाजार के गठजोड़ ने राष्ट्र की संप्रभुता को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया है। वैश्विक पूंजी और बाजार के दबाव से राष्ट्र-राज्य कमजोर हुआ है और राज्य की लोक कल्याणकारी नीतियाँ लगभग अप्रभावी हो गयी हैं। ग्लोबल गाँव के देवता, सेज पर संस्कृत, और काला पादरी आदि उपन्यासों का विश्लेषण करते हुए ये प्रभाव स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं।

विषय सूची

1. धर्म-सत्ता और राष्ट्रवाद : अवधारणा, संबंध और सत्ता विमर्श 2. समकालीन हिन्दी उपन्यासों में व्यक्तभाषाई अस्मिता का धर्म और राष्ट्रवाद से संबंध 3. समकालीन हिन्दी उपन्यासों में धार्मिक राष्ट्रवाद और धर्म निरपेक्ष राट्रवाद 4. समकालीन हिन्दी उपन्यासों में सांप्रदायिकता, फासीवाद और धार्मिक वर्चस्व की राजनीति 5. समकालीन हिन्दी उपन्यासों में भूमंडलीकरण, उदारवाद और धर्म के अंतःसंबंध। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

16. पांडेय (रामचरण)
बीसवीं सदी के प्रारम्भिक दो दशकों में हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता का विकास।
निर्देशिका : प्रो. सुधा सिंह
Th 23803

सारांश
(असत्यापित)

बीसवीं सदी के प्रारम्भिक दो दशकों की हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता ने भाषा परिष्कार व साहित्य के संवर्धन में उर्वर जमीन तैयार की। साहित्यिक पत्रकारिता के मानकों का निर्धारण इसी काल खंड में हुआ। हिंदी साहित्य के इतिहास में पहली बार साहित्य के विकास का नेतृत्व साहित्यिक पत्रकारिता ने किया।कहना न होगा कि इस नेतृत्व में अहम भूमिका महावीर प्रसाद द्विवेदी के संपादन में 'सरस्वती' पत्रिका ने निभाई। लेकिन 'सरस्वती' के साथ ही 'छत्तीसगढ़ मित्र' , 'समालोचक' तथा 'इन्दु' जैसी साहित्यिक पत्रिकाओं ने भी साहित्य के विकास में योगदान किया। इन पत्रिकाओं ने देशोन्नति, भाषा विषयक सुधार तथा खड़ी बोली को काव्यभाषा के रूप में प्रतिष्ठा दिलाने में महती भूमिका निभाई। कविता में दरबारी प्रवृत्तियों का विरोध करते हुए राष्ट्रीय जागरण का शंखनाद किया। गद्य व काव्य की भाषा में एकता कायम करते हुए काव्य में खड़ी बोली को प्रतिष्ठित किया। कहानी विधा का प्रादुर्भाव साहित्यिक पत्रिकाओं के ही माध्यम से हुआ। भाषा व साहित्य के क्षेत्र में स्वस्थ वाद-विवाद की परंपरा कायम करके भाषाई शुद्धता तथा आलोचना विधा का विकास हुआ। तत्कालीन समय से सम्बन्धी राजनैतिक व धर्म सम्बन्धी लेख न छापने की घोषणा के बावजूद पत्रकारिता में राष्ट्रीय चेतना का प्रखर रूप देखने को मिलता है। इस युग की साहित्यिक पत्रकारिता ने साहित्य के नैतिक व आदर्शवादी मापदंड निर्धारित किए। जिसका प्रभाव तत्कालीन साहित्यकारों पर व्यापक रूप से पड़ा। साहित्यिक पत्रकारिता ने पाठकीय अभिरूचि पैदा करते हुए समाज में साहित्यिक संस्कार पैदा किया। साहित्यिक पत्रिकाओं की संपादकीय नीति में 'पाठकों के हित का ध्यान' सर्वोपरि था। उन्होंने कभी भी प्रलोभनों से समझौता नहीं किया। अपने कठोर श्रम तथा जुझारू तेवर से द्विवेदी युग के साहित्यकारों तथा लेखकों ने साहित्यिक पत्रकारिता को सिर्फ साहित्य से ही नहीं जोड़ा बल्कि ज्ञान-विज्ञान के सभी पहलुओं से जोड़ते हुए उसे सांस्कृतिक जागरण का माध्यम बनाया।

विषय सूची

1. साहित्यिक पत्रकारिता की संरचना 2. 1900 से 1920 की हिंदी पत्रकारिता का परिदृश्य 3. साहित्यिक पत्रकारिता और स्वाधीनता आंदोलन 4. सांस्कृतिक चिंतन और साहित्यिक पत्रकारिता 5. साहित्यिक पत्रकारिता और जीवन शैली के सरोकार।उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

17. पुरी (अजीत कुमार)
समाजवादी चिन्तन-दृष्टि और रामवृक्ष बेनीपुरी का साहित्य।
निर्देशक : प्रो. मोहन
Th 23840

सारांश
(असत्यापित)

प्रस्तुत शोध प्रबंध पांच अध्यायो मे विभाजित है ! प्रथम अध्याय 'समाजवादी चिंतन : विकास के सोपान' के अंतर्गत समाजवादी चिंतन किन परिस्थितियो मे निर्मित और कैसे उसका विस्तार हुआ इसको थामस मूर , सेंट साइमन, चार्ल्स फुरियर , राबर्ट ओवन , लुई ब्लांक और मार्क्स आदि विचारको के सिद्धांतो मे देखा गया है ! भारतीय समाजवादी चिंतन को नरेंद्रदेव, राममनोहर लोहिया और जयप्रकाश के विचारो के अंतर्गत मूल्यांकित करने का प्रयास किया गया है क्योंकि इन्ही समाजवादी चिंतको का बेनीपुरी पर गहरा असर था ! समाजवाद ने साहित्य को किस तरह पुन: परिभाषित किया , इसकी भी विवेचना की गयी है ! द्वितीय अध्याय 'रामवृक्ष बेनीपुरी - सृजन और कर्म ' के अंतर्गत बेनीपुरी के व्यक्तित्व निर्माण के परिवेशो यथा - स्वाधीनता आंदोलन, समाजवादी आंदोलन के साथ उनकी भूमिका का मूल्यांकन किया गया है, इसी के साथ बेनीपुरी के साहित्य का सम्पूर्ण विवरण भी प्रस्तुत कर दिया गया है ! तृतीय अध्याय ' बेनीपुरी साहित्य मे समाजवाद की चेतना ' मे बेनीपुरी के सम्पूर्ण साहित्य को समाजवादी चेतना के आलोक मे देखने का कार्य किया गया है ! बेनीपुरी के उपन्यास , कहानी, शब्दचित्र आदि को समाजवादी साहित्य के मापदंडो पर तौला गया है ! चतुर्थ अध्याय ' समाजवादी चेतना के आलोक मे बेनीपुरी की पत्रकारिता ' मे बेनीपुरी के पत्रकार जीवन की समीक्षा की गई है ! बेनीपुरी की समाजवादी चेतना को युवक , जनता और नई धारा जैसे पत्रो के आलोक मे देखने का कार्य किया गया है ! पंचम अध्याय ' समाजवादी चिंतन के भाषा - सांस्कृतिक - राजनीतिक आयाम और बेनीपुरी' के अंतर्गत बेनीपुरी साहित्य के भाषा सामर्थ्य और उसके सांस्कृतिक- राजनीतिक सरोकारो का मूल्यांकन किया गया है ! उपसन्हार के अंतर्गत बेनीपुरी के हिंदी साहित्य मे अवदान पर विचार किया गया है !

विषय सूची

1. समाजवादी चिंतन : विकास के सोपान 2. रामवृक्ष बेनीपुरी : सृजन एवं कर्म 3. बेनीपुरी साहित्य में समाजवाद की चेतना 4. समाजवादी चेतना के आलोक में बेनीपुरी की पत्रकारिता 5. समाजवादी चिंतन के भाषा-सांस्कृतिक-राजनीतिक आयाम और बेनीपुरी।उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

18. बरखा

रंगमंच और जेंडर : महिला निर्देशकों के संदर्भ में ।

निर्देशिका : डॉ. प्रज्ञा

Th 23812

सारांश

(असत्यापित)

इस शोध विषय के अंतर्गत हिंदी रंगमंच की प्रमुख महिला निर्देशकों की चुनिंदा प्रस्तुतियों को जेंडर की दृष्टि से परखने का प्रयास किया गया है। इन महिला निर्देशकों में मैंने अमाल अलाना, अनुराधा कपूर, कीर्ति जैन ,नीलम मानसिंह चौधरी, त्रिपुरारी शर्मा का चयन किया है । ये सभी वह निर्देशक हैं जिन्होंने अपने ज्ञान और अनुभव के साथ-साथ अपनी सामाजिक और निजी परिस्थितियों के कारण उपजे भाव बोध से रंगमंच को नए रूपों में परिभाषित किया । इन्होने लगभग सभी तरह के विषयों को अपनी प्रस्तुतियों का आधार बनाया, समाज के ज्वलंत मुद्दे इनकी प्रस्तुतियो के केंद्र में रहे ,किंतु सबसे अधिक प्रस्तुतियां इन्होंने स्त्री और जेंडर के संदर्भ में की। इनके नाटकों की स्त्री पुरुषों की स्त्री से भिन्न है अधिक बोल्ड और संयमी है । वह एक वास्तविक स्त्री है, जो अपने निर्णय स्वयं लेती है। इनकी प्रत्येक प्रस्तुति पुरुषों से भिन्न एक नया मुहावरा गढती है । समाज के पूर्वाग्रहो को तोड़कर नई- चेतना जागृत करना इनकी प्रस्तुतियो में सामान्य रहा है ।इन सभी निर्देशकों की रचना-प्रक्रिया, स्क्रिप्ट चुनने का तरीका चुने गए पाठो में नए अंशों को जोडना-घटाना इत्यादि सभी उनकी प्रयोगधर्मी प्रवृत्ति को स्पष्ट करते हैं । इतना होने पर भी पुरुष निर्देशकों का वर्गीकरण जहाँ उनकी सोच और शैली के आधार पर किया जाता है वहीं दूसरी ओर निर्देशन के क्षेत्र में कार्यरत सभी स्त्रियों को सामान्यीकृत कर महिला निर्देशकों की श्रेणी मे डाल दिया जाता है। किंतु कला मात्र कला होती है कलाओं में भेदभाव नहीं होता, फिर चाहे वह भेद जाति का हो वर्ग का हो या जेंडर का हो। मेरे शोध विषयों का उद्देश्य रंगमंच कला के विकास में अपना योगदान देने वाली उन महिला निर्देशकों को प्रकाश में लाना है जिन्हें पितृसत्तात्मक सोच के चलते सदा नकारने का प्रयास किया गया है।

विषय सूची

1. जेंडर : अर्थ, स्वरूप, अवधारणा और इतिहास 2. हिन्दी रंगमंच और स्त्री सरोकार 3. हिन्दी रंगमंच में महिला निर्देशकों की उपस्थिति और हस्तक्षेप (1970 के बाद) 4. महिला निर्देशक : नई सैद्धांतिकी और सौंदर्यशास्त्र 5. हिन्दी रंगमंच : प्रमुख महिला निर्देशक (जेंडर के संबंध में महिला निर्देशकों की महत्त्वपूर्ण प्रस्तुतियों का विशेष अध्ययन) ।उपसंहार। परिशिष्ट। संदर्भ ग्रंथ सूची।

19. बेबी कुमारी

संजीव के उपन्यासों में पराधीनताओं के यथार्थ और संघर्ष के आयाम।

निर्देशिका : डॉ. विद्या सिन्हा

Th 23830

सारांश
(असत्यापित)

संजीव शोध औए संघर्ष के रचनाकार हैं. जहाँ शोधपरक दृष्टि उन्हें प्रयोगधर्मी बनाती है वहीं उनकी संवेदनशील दृष्टि चुनौतियों को स्वीकार करते हुए संघर्ष में उतरती है. जीवन एवं समाज ओर व्यवस्थागत विसंगतियों के प्रभाव एवं क्रिया-प्रतिक्रिया को गहरे संवेदनात्मक कथासूत्र में पिरोते हुए उनके अनुभव जगत कि औपन्यासिक सिद्धि बहुफलकीय है. आधुनिक सभ्यता और समाज के स्थापित मूल्यों को वैज्ञानिकता और कूपमंडूकता के द्वंद्व द्वारा वे उपन्यासों में परत-दर-परत उधेड़ते चलते हैं. उनके उपन्यास हमारे समय में सम्वेदनाओं तथा जीवन मूल्यों कि टूटन और विघटन के ऐसे परिदृश्य उपस्थित करते हैं जो हमारे समय कि शंकाओं और स्थितियों का चित्र उकेरने के साथ ही वर्तमान कि आधारभूमि पर भविष्य कि चिंताओं और सरोकारों को महसूस करते हुए आश्वस्त नहीं बेचैन करते हैं.

विषय सूची

1. आधुनिकता की अवधारणा और यथार्थ का स्वरूप 2. भारत के सन्दर्भ में स्वाधीनता एवं पराधीनता के प्रश्न 3. हिन्दी उपन्यास का ढाँचा और यथार्थ के रूप 4. संजीव के उपन्यासों में वैचारिक विशिष्टता (अपने समकालीन रचनाकारों के सन्दर्भ में) 5. संजीव के उपन्यासों में संघर्ष के आयाम 6. संजीव के उपन्यासों की संरचना।उपसंहार। परिशिष्ट। संदर्भ ग्रंथ सूची।

20. बैरवा (ओमप्रकाश)
समकालीन हिंदी कविता में स्वत्व (SELF) की तलाश : 1990 से 2010।
निर्देशिका : डॉ. मंजु मुकुल कांबले
Th 23838

सारांश
(असत्यापित)

प्रथम अध्याय ‘स्वत्व स्वरूप और अवधारणा’ में मुख्यतः स्वत्व की अवधारणा उसके दार्शनिक एवं मनोवैज्ञानिक अर्थ एवं संदर्भ को समझने का प्रयास किया गया है. द्वितीय अध्याय ‘स्वत्व और सांस्कृतिक अस्मिता का संबंध’ में स्वत्व और उससे निर्मित भिन्न-भिन्न अस्मिताओं के साथ संबंध को जानने का प्रयास किया गया है. तृतीय अध्याय ‘साहित्य की रचना प्रक्रिया में स्वत्व की भूमिका में विश्लेषित किया गया है. इतना ही नहीं पूर्व में जिक्र किया गया था कि साहित्यिक विधाओं में कविता की रचना प्रक्रिया विशिष्ट है. इसकी भी पडताल की गई है. वहीं दूसरी मुख्य बात जिसका जिक्र आवश्यक है कि कविता की रचना प्रक्रिया में शामिल अन्य प्रमुख घटकों के साथ-साथ स्वत्व की क्या भूमिका है. उसे भी देखने का प्रयास किया गया है. चतुर्थ अध्याय ‘समकालीन हिंदी कविता और स्वत्व में प्रमुखत: शोध विषय का चरमोत्कर्ष है. जहां एक ओर समकालीन हिंदी कविता में घटित हो

रहे दलित स्त्री एवं आदिवासी विमर्शों के रुप में उभर रहे स्वत्व के अलग-अलग रूपों को जानने - परखने के साथ साथ विश्लेषित किया गया है. वहीं दूसरी ओर समकालीन कविता के अपनी परंपरा से सामंजस्यता और अलगाव की प्रकृति को भी बारीकी से देखा गया है. पंचम अध्याय ृउत्तर उपनिवेशवाद में स्वत्व की बहस और समकालीन हिंदी कविता' में स्वत्व और सांस्कृतिक पहचान की आकांक्षा के मूल कारणों को समझते हुए उन की प्राप्ति में आ रहे सामाजिक राजनीतिक अवरोधों पर दृष्टि रखी गई है. ऐसे ही दलितए अल्पसंख्यक एवं स्त्री विमर्श आदि जो इस समय सर्वाधिक चर्चा में बने हुए हैंए उनके भी मूलभूत कारणों की तलाश करते हुए उनके सामाजिकए सांस्कृतिक और राजनीतिक आयामों को देखने का प्रयास किया गया है.उत्तर - उपनिवेशवाद के केंद्र में पनप रहे दो मुख्य मुद्दों मनुष्य की भाषायी एवं सांस्कृतिक अस्मिता के संकट को भी सूक्ष्मता से जानने समझने की कोशिश की गई है.

विषय सूची

1. स्वत्व : स्वरूप और अवधारणा 2. अध्यायस्वत्व : और सांस्कृतिक अस्मिता का संबंध 3. स्वत्व : साहित्य की रचनाप्रक्रिया में स्वत्व की भूमिका 4. समकालीन हिंदी कविता और स्वत्व 5. उत्तर उपनिवेशवाद में -स्वत्व की बहस और समकालीन हिंदी कविता। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

21. मंजू देवी

डॉ. राम विलास शर्मा की आलोचना एवं उनकी कविता में अन्तःसंबंध।

निर्देशक : डॉ. बिक्रम सिंह

Th 23829

सारांश

(असत्यापित)

मार्क्सवादी आलोचक एवं कवि रामविलास शर्मा के साहित्यिक चिन्तन का फलक अत्यन्त विस्तृत है। उन्होंने भाषाए दर्शनए संस्कृतिए परम्पराए इतिहासए जातिए नवजागरण तथा साहित्य को अपने मौलिक चिन्तन द्वारा निरन्तर विकसित एवं समृद्ध किया है। उनके चिन्तन एवं लेखन के बीच सम्बन्धों की तारतम्यता उनकी संचेतना को प्रकट करती है। यही संचेतना उनकी आलोचना एवं कविता के मध्य एक सम्बन्ध कायम करती है। डॉ. शर्मा ने मार्क्सवादी ऐतिहासिक द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद को आधार बनाकर साहित्य की प्रगतिशील व्याख्या प्रस्तुत की है। हिन्दी नवजागरण को अन्य नवजागरणों से अलगाते हुए राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी नवजागरण की भूमिका तथा उसके स्वतः विकास को स्पष्ट किया है। उन्होंने साहित्य की द्वंद्वात्मक व्याख्या करते हुए साहित्य की विषयवस्तु तथा रूप में होने वाले परिवर्तनों तथा उनके परस्पर सम्बन्धों को स्थापित किया है। डॉ. शर्मा ने साहित्यिक परम्परा एवं इतिहास का विश्लेषण करते हुए हिन्दी जाति तथा भाषा के विकास तथा गठन को स्पष्ट किया है। इसके साथ ही भारतीय संस्कृति के विकास एवं संरक्षण पर बल देते हुए मानवीय मूल्यों को प्रतिष्ठित किया है। डॉ. शर्मा ने संस्कृत साहित्य से लेकर आधुनिक तक के

विभिन्न कवियों के साहित्य का मूल्यांकन करते हुए काव्य की प्रगतिशील धारा को विकसित किया है। साथ ही भारतेन्दु युगीन गद्य लेखकों से लेकर आधुनिक गद्य लेखकों एवं समीक्षकों का मूल्यांकन करते अपना तर्कसंगत एवं सन्तुलित दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। डॉ. शर्मा की कविताओं के विविध पक्षों वस्तु एवं रूप का अध्ययन करते हुए विभिन्न साहित्यकारों के मूल्यांकन के आधार पर निर्मित मान्यताओं को उनकी कविता में देखने का प्रयास किया है। उनकी आलोचना एवं कविता के मध्य स्थापित हुए सम्बन्धों पर भी विचार किया है। उनकी कविताएँ वस्तु एवं शिल्प दोनों ही दृष्टि से उनकी मान्यताओं पर खरी उतरती है। अतः कहा जा सकता है कि उनकी आलोचना उनकी कविता का ही विस्तार है।

विषय सूची

1. रामविलास शर्मा की आलोचना और साहित्यि मान्यताएँ 2. रामविलास शर्मा की काव्य आलोचना दृष्टि 3. रामविलास शर्मा की गद्य साहित्य संबंधी आलोचना दृष्टि 4. रामविलास शर्मा की कविता के विविध पक्ष 5. आलोचना दृष्टि और रामविलास शर्मा की कविताएँ। उपसंहार। ग्रंथ-सूची।

22. मंजु लता

सदी के आर-पार दो दशकों (1990-2011) की यथार्थ-गाथा : राजेश जोशी की कविता।

निर्देशिका : डॉ. प्रज्ञा

Th 23825

सारांश

(असत्यापित)

शोध का विषय 'सदी के आर-पार दो दशकों (1990-2011) की यथार्थ-गाथाःराजेश जोशी की कविता' मेरे लिए बीते समय में आए बदलाव और बदलाव से उत्पन्न संकट का आकलन वर्तमान समय के परिप्रेक्ष्य के बरक्स राजेश जोशी की कविताओं को समझने की कोशिश है। 1990 से 2011 तक राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक परिदृश्यों में अनेक परिवर्तन आए। राजनीतिक क्षेत्र में जहाँ केन्द्रीय सत्ता में लगातार सरकारें बदलती रही। वहीं जनता का सरकार के प्रति अविश्वास भी बढ़ता गया। फलतः प्रायोजित राजनीति, प्रायोजित अपराध एवम् प्रायोजित संस्कृति से संचालित समाज असमंजस की स्थिति में खड़ा है। किन्तु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर देखा जाए तो यह परिस्थिति अपवाद नहीं है। तमाम जटिलताओं के बावजूद भारतीय लोकतंत्र और समाज दोनों विकास की ओर बढ़ रहा है। यह भी सच है कि विकास जटिलताओं का जन्म देते हैं। 1990 से 2011 तक वैश्विक स्तर एवं स्थानीय स्तर पर भिन्न-भिन्न प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ा जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाओं का पुनर्निर्माण, आतंकवाद, पर्यावरण सम्बन्धी समस्याएँ, अवैध व्यापार, शरणार्थी समस्या, नव-सामाजिक आन्दोलन, अलगाव, नक्सलवाद, नृजातीय, धार्मिक समस्याएँ, क्षेत्रवाद, भाषावाद, पलायन इत्यादि समस्याएँ है जिसका सामना प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों ही रूपों से मनुष्य को करना पड़ रहा है। समकालीन कविता का प्रमुखर स्वर मनुष्य को अमनुष्य

होने से बचाना तथा मानवता की रक्षा करते हुए जीवन को नयी ऊष्मा तथा जागरूकता प्रदान करता है जिसमें राजेश जोशी का काव्य लीक से हटकर समूचे जीवन की वैविधता को परिभाषित करता है। समाज के निचले तबके से शुरू होती उनकी कविताओं का संसार अति-विपुल है। जहाँ हर एक छोटी से छोटी चीजों से लेकर 'मनुष्य' तक उनकी कविता का विषय है। 'मानवीय सरोकार' उनकी कविता का मूल बिन्दु है। मनुष्य को मनुष्यता से अपदस्थ करने वाली चीजें ज्यादा प्रबल हो गई है।

विषय सूची

1. इक्कीसवीं सदी की ओर प्रस्थान (1990-2011) 2. नयी सदी : नयी चुनौतियाँ (1990-2011) और हिन्दी कविता 3. राजेश जोशी की कविता का मूल्य बोध 4. राजेश जोशी की कविताओं का भारत 5. बदलते हुए यथार्थ के अनुरूप शिल्प की माँग।उपसंहार। परिशिष्ट। संदर्भ ग्रंथ सूची।

23. मीणा (काना राम)
लोकप्रिय हिन्दी उपन्यासों का सामजशास्त्रीय अध्ययन।
निर्देशक : डॉ. प्रेम सिंह
Th 23841

विषय सूची

1. समाजशास्त्र : अर्थ और सैद्धान्तिकी 2. साहित्य का समाजशास्त्र : अर्थ एवं सैद्धान्तिकी 3. लोकप्रिय साहित्य का स्वरूप एवं अवधारणा 4. लोकप्रिय उपन्यासों की लोक प्रियता के समाजशास्त्रीय आधार 5. लोकप्रिय उपन्यास का समाजशास्त्र।उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

24. मीणा (छोटू राम)
कृष्णनाथ के यात्रा-वृत्तान्तों का सामाजिक-सांस्कृतिक अध्ययन।
निर्देशक : डॉ. वीरेन्द्र भारद्वाज
Th 23833

सारांश
(असत्यापित)

अर्थशास्त्र के गम्भीर अध्येता रहे कृष्णनाथ एक यायावर साधक के रूप में बौद्ध-धर्म व दर्शन के पुरातन व समकालीन स्वरूप की तलाश में आजीवन हिमालय में यात्रारत रहे। इन य़ात्राओं के माध्यम से उन्होंने हिमालय के सीमावर्ती इलाकों की 'गोनपा-संस्कृति' को मध्यदेश की 'मंदिर-संस्कृति' से जोड़ने का काम किया। हिमालय व मध्यदेश की सांस्कृतिक समृद्धि, वैचारिक दृढ़ता व धार्मिक गतिविधियों के जरिये वे वहाँ के लोकमानस के व्यवहार का अध्ययन करते हैं। ऐसा करते हुए वे न केवल लोक-परंपरा में मौजूद साहित्य को संरक्षित करते हैं, बल्कि नयी पीढ़ी को भी उससे जोड़ते हैं। यायावर राहुल सांकृत्यायन के बाद कृष्णनाथ दूसरे ऐसे यात्री थे, जिन्होंने हिमालयी समाज व संस्कृति को मध्यदेश की भूमि से

जोड़ने का उल्लेखनीय काम किया। उनकी मुख्य चिन्ता हिमालय की धर्मभाषा भोटी के अध्ययन-अध्यापन की है; जिसके अभाव में वहाँ हजारों साल से जीवित बौद्ध-धर्म, दर्शन व संस्कृति आने वाले वर्षों में लुप्त हो जाएगी। 'छम्-छेशु' जैसे उत्सव हिमालय को सांस्कृतिक रूप में जोड़े हुए है, लेकिन अब वह भी अपना मूल अर्थ खोकर कर्मकाण्ड भर बनता जा रहे हैं। कृष्णनाथ के लिए हिमालय में जातिगत संरचना के अलग-अलग स्तर चौंकाने वाले हैं, जिसे वे मध्यदेश के सनातन धर्म के प्रभाव से जोड़कर देखते हैं। इसी कड़ी में वे लोक को शास्त्र से ऊपर रखते हैं। उनकी यह कोशिश हिमालय से हमारे अपरिचय की गाँठ खोलती है, जो तिब्बत पर चीन के आक्रमण के बाद और अधिक बढ़ गयी थी। अपने यात्रा-वृतान्तों को जीवन्त और संप्रेषणीय बनाने के लिए कृष्णनाथ लोक-सुक्तियों, मुहावरों व कहावतों का सटीक प्रयोग करते हुए प्रकृति और मनुष्य के रिश्ते की नयी व्याख्याएँ करते हैं। 'वृक्ष विलाप करना ' जैसे ढ़ेरों नये मुहावरे गढ़ती उनकी रचनाएँ यात्रा विधा को विषय व शिल्प की दृष्टि से नयी भाषा व नया तेवर प्रदान करती हैं।

विषय सूची

1. यात्रा-वृतान्त की सैद्धांतिकी 2. यात्रा साहित्य और कृष्णनाथ 3. कृष्णनाथ के यात्रा-वृतान्तों का सामाजिक पक्ष 4. कृष्णनाथ के यात्रा-वृतान्तों का सांस्कृतिक पक्ष 5. कृष्णनाथ के यात्रा-वृतान्तों की भाषा और शिल्प।उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

25. मीणा (बलराम)
विशाल भारद्वाज और अनुराग कश्यप की फिल्मों का सांस्कृतिक अध्ययन।
निर्देशिका : प्रो. सुधा सिंह
Th 23816

सारांश
(असत्यापित)

एक आधुनिक ज्ञानानुशासन के अंतर्गत सांस्कृतिक अध्ययन का तात्पर्य अर्थों व विचारों के उत्पन्न होने की पद्धति का अध्ययन है, फ्रेंकफर्ट स्कूल की इस मान्यतानुसार विशाल भारद्वाज व अनुराग कश्यप की फ़िल्मों को विश्लेषित करते हैं तो पाते हैं कि उनके द्वारा उत्पन्न किए गए अर्थ स्वतंत्र नहीं हैं बल्कि बाज़ार व पूँजी-पक्ष द्वारा नियंत्रित हैं। ऐसे में रचनात्मक उद्देश्य बदल जाता है और अंततः यहाँ शक्ति-पक्ष के लिए अर्थ-निर्मिति होने लगते हैं जो कला की जन-पक्षधरता के भी विरुद्ध आ पड़ते हैं।

विषय सूची

1. संस्कृति, सांस्कृतिक अध्ययन और अनुशासनों का सांस्कृतिक अध्ययन 2. सांस्कृतिक अध्ययन और जनमाध्यम के रूप में सिनेमा 3. विशाल भारद्वाज और अनुराग कश्यप की फिल्मों की सामान्य विवेचना 4. विशाल भारद्वाज की फिल्मों में संस्कृति का रूपायन 5. अनुराग कश्यप की फिल्मों में संस्कृति का

रूपायन 6. विशाल भारद्वाज और अनुराग कश्यप की सांस्कृतिक दृष्टि का विश्लेषण।उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

26. मीणा (हरि राम)
हिन्दी की दलित आत्मकथाओं का सामाजिक-सांस्कृतिक अध्ययन।
निर्देशक : डॉ. मुकेश कुमार
Th 23821

सारांश
(असत्यापित)

दलित साहित्य दलित समाज का वह दर्पण है जिसमें सब कुछ साफ-साफ देखा जा सकता है। दरिद्रता, छुआछूत, जातिवाद, घृणा, अपमान, शोषण, अशिक्षा, बंधुवा, बेगारी तथा उपेक्षित जीवन का दंश दलित सदियों से झेल रहा है। आजादी के सत्तर वर्ष बाद भी दलितों के पेशे में बदलाव नहीं आया, क्या यही आजादी है? हिंदी दलित आत्मकथाएँ नई पीढ़ी के लिए एक चिंगारी का काम करेंगी, उनमें नायक-नायिकाओं ने वर्ण-व्यवस्था की बक्खियाँ उंधेड़कर नये प्रतिमान स्थापित किये हैं। तिरस्कृत जीवन के बाद भी नायक या नायिका गंदगी से उठकर और दुर्गम-कटीले रास्तों के जंगल से निकलकर अपने लक्ष्य तक पहुँचता है। डा. अंबेडकर के कथन 'शिक्षित बनो, संगठित रहो, और संघर्ष करो' को सभी दलित लेखक स्वीकार करते हैं, और ये दलित आत्मकथाएँ इसी का ही परिणाम हैं। मराठी दलित आत्मकथाकारों ने दलितोत्थान की दृष्टि प्रदान की, उसी से नई दिशा दलित समाज को मिलती है। दलितों के ब्राह्मणवाद और सजातीय छुआछूत की बानगी को नकारा नहीं जा सकता। दलित संस्कृति खतरे में दिखाई देती है, उनके स्वांग, लोकगीत, तथा लोकभाषा पर विचार की आवश्यकता है। एकल परिवार प्रथा और पितृसत्तात्मक समाज का प्रभाव दलित स्त्री के जीवन में स्पष्ट दिखाई देता है। दलित समाज के विखंडन का कारण-दलित स्त्रियों की सक्रिय भागीदारी का अभाव। इसमें दलित समाज में व्याप्त ग्रामीण अंचल की बोली के शब्द, लोकोक्ति एवं मुहावरे देखने को मिलते हैं। मैला ढोने और झाड़ू लगाने वाली जाति आज भी उसी स्थिति में है, जैसे पहले थी। दलितों की आपसी टकराहट विनाश को जन्म देगी न कि विकास को। दलित स्त्रियाँ पहले भी दोहरी मार झेल रही थी और आज भी। शिक्षा के प्रकाश से गरीबी और छुआछूत को मिटाया जा सकता है। दलित चिंतकों के जनवादी और लोकतांत्रिक मूल्यों का समावेश से सामाजिक-सांस्कृतिक आंदोलन को मजबूत बनाया जा सकता है।

विषय सूची

1. हिन्दी दलित आत्मकथाएं 2. हिन्दी की दलित आत्मकथाओं का संक्षिप्त परिचय 3. हिन्दी की दलित आत्मकथाओं का सामाजिक-सांस्कृतिक अध्ययन 4. हिन्दी की दलित आत्मकथाओं का संरचनात्मक अध्ययन 5. हिन्दी दलित आत्मकथाओं की प्रासंगिकता और भविष्य। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

27. मीना (उदय सिंह)

लोकधर्मिता की दृष्टि से मणि मधुकर के नाटकों का अध्ययन।

निर्देशक : डॉ. डी. ए. पी. शर्मा एवं प्रो. मोहन

Th 23828

सारांश

(असत्यापित)

मणि मधुकर के नाटकों का प्रमुख गुण है - लोकधर्मिता। साधारण मनुष्य के पक्ष में खड़े होकर समकालीन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक विसंगतियों पर लोक-शैली में करारा प्रहार उनकी रचनात्मकता का उद्देश्य है। उनके नाटकों का प्रत्येक अंग - कथा-वस्तु, पात्र परिकल्पना, देश-काल, वातावरण, रंग-भाषा, दृश्य-बंध, संवाद, मंच सज्जा आदि सभी में लोक-तत्व का जुड़ाव अव्वल ही दिखता है।

विषय सूची

1. नाटक और रंगमंच का लोकधर्मी स्वरूप 2. लोकधर्मी नाट्य परंपरा 3. मणि मधुकर का रंग-व्यक्तित्व 4. मणि मधुकर के नाटकों में अभिव्यक्तलोकधर्मिता का अमूर्त पक्ष 5. मणि मधुकर के नाटकों में अभिव्यक्तलोकधर्मिता का मूर्त पक्ष 6. मणि मधुकर के समकालीन नाटककार : लोकधर्मिता के विविध स्वर। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

28. मीनाक्षी

रीतिबद्ध और रीतिमुक्त काव्यधाराओं के संदर्भ में मध्यकालीन नैतिकताओं का अध्ययन।

निर्देशिका : डॉ. मंजु मुकुल कांबले

Th 23834

सारांश

(असत्यापित)

मेरा शोध-विषय है ृरीतिबद्ध और रीतिमुक्त काव्यधाराओं के संदर्भ में मध्यकालीन तिकताओं का अध्ययन' । इस विषय के अन्तर्गत दोनों काव्यधराओं को नैतिकता की दृष्टि से परखने का प्रयास किया गया है। रीतिकालीन समाज सामंती समाज था इसलिए उस काव्य की नैतिकता सामंती थी। आज सामंती नैतिकता अर्थहीन हो चुकी है। आधुनिक परिवेश में नैतिकता निरंतर लोकतंत्रीय स्वरूप धारण करने के लिए संघर्षरत है। ऐसी स्थिति में रीतिबद्ध और रीतिमुक्त काव्यधाराओं में व्यक्त मध्यकालीन नैतिकताओं को तुलनात्मक आधार पर देखना और उन्हें आधुनिक दृष्टि से परखना इसप्रस्तुत शोध् प्रबंध का उद्देश्य है। हिन्दी साहित्य में नीतिकाव्य की एक अलग परंपरा मिलती है किन्तु प्रस्तुत शोध- प्रबंध ने उस धारा को अपना आधार नहीं बनाया। यहाँ रीतिबद्ध और रीतिमुक्त काव्यधाराओं के

माध्यम से मध्यकालीन नैतिकता के उस पक्ष की छानबीन की गई है जो इन काव्यधाराओं में सायास या अनायास प्रकट हुआ है।

विषय सूची

1. नीति एवं नैतिकता की अवधारणा तथा भारतीय परंपरा में उसका विकास 2. हिन्दी साहित्य का रीतिकाल : स्वरूप, विस्तार और परिवेश 3. रीतिबद्ध और रीतिमुक्त काव्यधाराओं में वैयक्तिक एवं पारिवारिक नैतिकताओं का अध्ययन 4. रीतिबद्ध और रीतिमुक्त काव्यधाराओं में सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक नैतिकताओं का अध्ययन 5. रीतिबद्ध और रीतिमुक्त काव्यधाराओं में राजनीतिक एवं आर्थिक नैतिकताओं का अध्ययन।उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

29. मौर्या (शैलजा)
नागार्जुन के साहित्य में मिथिला प्रदेश की जनपदीय चेतना।
निर्देशिका : डॉ. हेमवती शर्मा
Th 23813

सारांश
(असत्यापित)

नागार्जुन का व्यक्तित्व और कृतित्व कालजयी है। नागार्जुन के साहित्य का दायरा इतना व्यापक है कि लोक और मैथिल संस्कृति जैसे अनेक विषयों को आधार बनाकर शोध करने का प्रयास किया गया है। नागार्जुन की कलम किसी एक दायरे में सिमट कर नहीं रही है जैसे नदी जहाँ से गुजरती है तो, आसपास उसका प्रभाव सहज ही देखा जा सकता है। उसी प्रकार नागार्जुन की कलम का दायरा भी बहुत व्यापक है। एक तरफ लोक के प्रवाह के क्रम में उन्होंने धरती के सौन्दर्य की झाँकी प्रस्तुत की है और दूसरी तरफ लोक चिंता के रूप में उन्होंने उन समस्याओं को उठाना चाहा है, जो उनकी शस्य श्यामला धरती को विपन्न धरती बना दे रही है। यही कारण है कि उनकी रचनाओं में मैथिल अंचल का स्वरूप दुहरा है- (काव्य और उपन्यासों को आधार बनाकर) एक है उसका नैसर्गिक सौन्दर्य और दूसरा है उसकी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, साँस्कृतिक दशा का बयान। नैसर्गिक सौन्दर्य में बाग-बगीचे, खेत-खलिहान, नदी, तालाब आदि सब कुछ है यहाँ। मैथिल अंचल जो सम्पन्न धरती है पर उसमें हद दर्जे की गरीबी, पिछड़ापन, शोषण, अत्याचार है, जो इस अंचल को विकृत करता है। नागार्जुन को बहुत सालता है। यही कारण है कि उनके उपन्यासों और काव्यों में इसकी उपस्थिति बहुत ज्यादा है। वह इसे जनता के सेवक कहे जाने वाले जमींदारों और नेताओं की साजिश मानते हैं। इसीलिए इनसे बचने के तमाम तरीके बताते हैं और उससे जूझने और जीतने का जीवट प्रदान करते हैं। इस शोध विषय का उद्देश्य नागार्जुन के साहित्य में विद्यमान मिथिला प्रदेश के जनपदीय भाव के विभिन्न पहलुओं पर विचार करने का प्रयास किया गया है। इन्होंने जीवन की विविधता को उसकी अच्छाईयों और बुराईयों के साथ चित्रित किया है और समाज को विकृत करने वाले आडम्बरों के प्रति घोर निंदा की है।

विषय सूची

1. जनपद, जनदीपय चेतना और मिथिला जनपद 2. नागार्जुन के साहित्य में व्यक्तमिथिला प्रदेश की जनपदीय समस्याएँ एवं उनके निरूपण में नागार्जुन का दृष्टिकोण 3. नागार्जुन के साहित्य में मिथिला समाज और जनपदीय संस्कृति के विविध आयाम 4. नागार्जुन का साहित्यिक योगदान 5. नागार्जुन के साहित्य में शिल्पगत वैशिष्ट्य।उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

30. रविन्दर कौर

अंबेडकरवादी परंपरा में हिन्दी दलित पत्रकारिता : स्थितियाँ और संभावनाएँ।

निर्देशक : प्रो. श्यौराज सिंह

Th 23805

सारांश

(असत्यापित)

समाज का प्रत्येक व्यक्ति अपनी अस्मिता और पहचान के लिए समाज के विरोधी पक्षों से संघर्ष करता है। परन्तु सदियों से दलित समाज का संघर्ष आज तक समाप्त नहीं हुआ है। आज दलित, मीडिया के माध्यम से अपनी नई पहचान बनाने का प्रयास कर रहा है। दलित मीडिया की मुख्य धारा डाॅ. अम्बेडकर के विचारों और आंदोलनों से जुड़ी है, जो ऊँच-नीच के बंधनों को त्यागती हुई नई समाज-व्यवस्था की स्थापना करती है। दलित मीडिया समतामूलक समाज की संरचना में दलित की पीड़ा, शोषण व समस्या को गम्भीर रूप में प्रस्तुत करता है, जिसके समाधान के लिए अनेक समाजसुधारकों, विद्वानों व चिन्तकों ने अपने विचार व्यक्त किए है। परन्तु हिन्दू समाज के अन्तर्गत उत्पन्न इस समस्या का समाधान करना सरल कार्य नहीं है। फिर भी दलितों के उत्थान के लिए दलित पत्रकारिता ने प्रयास किए। आज दलित मीडिया जहां दलित को हाशिए के जीवन से बाहर लाया, वहीं अम्बेडकरी समाज से भी दलित को जोड़ता है। 20वीं शताब्दी का दलित शोषण और पीड़ा को सहते हुए समाज के सामने आया, जिससे दलित में जागरूकता और चेतना उत्पन्न हो गई। फिर नए उपजे दलित समाज को मीडिया के द्वारा समाज के समक्ष प्रस्तुत किया गया। मीडिया दलित के अत्यधिक विस्तार की ओर विशेष ध्यान दे रहा हैं। पत्रकारिता की दृष्टि से वंचित वर्ग को समझें, तो दलित वर्ग समाज का दर्पण है, जिसकी छवि सदियों से साहित्य व मीडिया में नहीं देखी गई। आज दलित पत्रकारिता उस दर्पण में दलित की यथार्थ तस्वीर को प्रस्तुत कर रही है। डाॅ. अम्बेडकर के विचारों से प्रभावित यह दलित मीडिया दलित वर्ग के उत्थान के लिए, अन्याय से मुक्ति के लिए कार्य कर रहा है और अंबेडकरवादी परंपरा में दलित पत्रकारिता की स्थिति भी निर्धारित कर रहा है।

विषय सूची

1. हिन्दी दलित पत्रकारिता : पृष्ठभूमि 2. दलित मीडिया और अम्बेडकरी पत्रकारिता 3. दलित मीडिया में स्त्री 4. हिन्दी दलित साहित्य और मीडिया का अंतर्सम्बंध 5. दलित पत्र-पत्रिकाएँ और उनके संपादकीय 6. दलित मीडिया के उद्देश एवं चुनौतियाँ। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची। परिशिष्ट।

31. रानी कुमारी

भूमंडलीकरण और 1990 के बाद का कथा-साहित्य : विशेष संदर्भ : मनोहरश्याम जोशी और उदय प्रकाश।

निर्देशिका : डॉ.स्नेह लता नेगी

Th 23806

सारांश

(असत्यापित)

भूमंडलीकरण, वैश्वीकरण अथवा ग्लोबलाइजेशन की पर्यायवाची अवधारणा है। यह एक ऐसी परिघटना है जिसने पूरी दुनिया को बेहद करीब ला दिया है। इसके कारण पूरा विश्व आर्थिक, तकनीकी, सूचना, सुरक्षा, व्यापार तथा मानव विकास के मामले में एक-दूसरे पर निर्भर हो गया है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के प्रथम अध्याय 'भूमंडलीकरण की अवधारणा' है। इसमें भूमंडलीकरण के अर्थ, परिभाषाओं तथा प्रकृति का शोध-परक विश्लेषण किया गया है। आज के भूमंडलीकरण की प्रकृति आर्थिक है। जिसने राजनैतिक शक्ति, समर्थन और रूप अपना लिया है। इससे वह और ज्यादा मारक हो गया है। इसके कारण एक वैश्विक बाजार बन गया है। द्वितीय अध्याय 'भूमंडलीकरण और 1990 के बाद की कथा-साहित्य में उसका प्रभाव' है। इसमें 1990 से पहले के कथा-साहित्य की बदलती संवेदना तथा 1990 के बाद एकदम बदले रूप और वस्तु का शोधपरक विश्लेषण किया गया है। भूमंडलीकरण के प्रभाव स्वरूप भारतीय समाज के बने बनाए खांचे-ढांचे टूट गए हैं, बदल गए हैं। परंपरागत संस्कृति का स्थान वैश्विक संस्कृति ने ले लिया है। तृतीय अध्याय 'मनोहर श्याम जोशी का कथा-साहित्य और भूमंडलीकरण' है। यहाँ जोशी जी के कथा-साहित्य में आए आंचलिक परिवर्तनों को चिन्हित किया गया है। पहाड़ों के दोहन, शोषण के साथ-साथ संस्कृति भी दूषित हो गई है, इसे जोशी जी कथा में कहते हैं। चतुर्थ अध्याय 'उदय प्रकाश का कथा-साहित्य और भूमंडलीकरण' है। एक तरफ उदारीकरण, निजीकरण और विकास का लुभावना चेहरा है तो दूसरी तरफ भूख, बीमारी, शोषण, यौन-अपराध, बिखरते जीवन मूल्य और एब्सर्ड राजनीति' है। उदय प्रकाश शहर, कस्बे तथा गांवों में भूमंडलीकरण के कारण आए बदलावों को अपने कथा-साहित्य में प्रस्तुत करते हैं। पंचम अध्याय 'मनोहरश्याम जोशी और उदय प्रकाश में कथा-साहित्य की भाषिक-संरचना' है। निष्कर्ष है कि भाषा विचारों की वाहक होने के साथ-साथ वक्ता की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक सत्ता, अस्मिता की द्योतक भी होती है। भाषा व्यक्ति के आर्थिक सम्बन्धों से आकार ग्रहण करती है।

विषय सूची

1. भूमंडलीकरण की अवधारणा 2. भूमंडलीकरण और 1990 के बाद का कथा-साहित्य में उसका प्रभाव 3. मनोहरश्याम जोशी का कथा-साहित्य और भूमंडलीकरण 4. उदय प्रकाश का कथा साहित्य और भूमंडलीकरण 5. मनोहरश्याम जोशी और उदय प्रकाश के कथा-साहित्य की भाषिक संरचना।उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

32. राय (परम प्रकाश)

नयी कविता की सैद्धांतिकी संबंधी बहसों का एक अध्ययन।

निर्देशक : डॉ. पवन कुमार

Th 23826

सारांश

(असत्यापित)

'नयी कविता' की सैद्धांतिकी बनने के क्रम में स्वयं नए कवियों के वक्तव्य, 'प्रगतिशील लेखक संघ' और 'परिमल' का सर्वाधिक योगदान है। सबसे महत्त्वपूर्ण इन कवियों की कविताएँ हैं | बीसवीं सदी का छठवां दशक नयी कविता की मुख्यभूमि है अर्थवान् शब्द की समस्या नयी कविता युग की एक केन्द्रीय समस्या है | शब्द की अर्थवत्ता में छंद, लय, ध्वनि आदि के साथ सामाजिक संदर्भ और सामाजिक उत्तरदायित्व जैसी बातें भी निहित हैं। अतः नयी कविता में किसी विशेष पंक्ति को उद्धरण के लिए उठा लेना उसकी अन्विति और विश्लेषण के साथ अन्याय करना है। अत्यधिक जटिलताओं का सामना करने वाले नए कवियों के लिए बौद्धिक कविताओं को गद्यात्मक शैली में व्यक्त करना एक स्वाभाविक प्रक्रिया थी। 'अर्थ की लय' पर बल देने वाले कुछ नए कवियों ने संगीत पक्ष की उपेक्षा की तथा संगीत से मुक्त कविता को "शुद्ध कविता" कहा, लेकिन केदारनाथ सिंह, अज्ञेय आदि कवियों ने न सिर्फ आधुनिक संवेदना के लिए संगीत तत्त्व को महत्त्वपूर्ण माना बल्कि अपनी रचनाओं को उससे प्राणवान भी बनाया। नए कवि की कल्पना शैली वैज्ञानिक है क्योंकि वह वस्तुवादी यथार्थोन्मुख दृष्टि लेकर जन्मा है। जटिल समस्या के समग्र विश्लेषण से युक्त 'अंधा युग' , 'अँधेरे में' जैसी लम्बी कविताएँ नयी कविता की प्रतिनिधि रचनाओं में शामिल हैं, किन्तु प्रगीतात्मक और भावबोध की तीक्ष्णता वाली 'साँप' , 'हाथ' , 'उड़ गयी चिड़िया' आदि छोटी कविताएँ भी नयी कविता का प्रतिनिधित्व करती हैं | नए कवियों में जीवन के प्रति जिस निराशा अभिव्यक्ति हुई है, उसके मूल में मध्यवर्गीय और शहरी जीवन के संघर्ष और विषमताएं हैं। नए कवियों को पुराने मूल्य अनुपयुक्त लगते हैं और नए मूल्य अभी बने नहीं हैं, इसलिए आस्था पर भी प्रश्नचिह्न है। किन्तु नयी कविता वहां असफल है, जहां कुंठा, निराशा आदि भावनाएं वास्तविक सन्दर्भों से हीन होकर व्यापक समस्याओं का रूप धारण नहीं कर पातीं।

विषय सूची

1. नयी कविता : अवधारणा और सैद्धांतिकी 2. स्वायत्तता, व्यक्ति स्वातंत्र्य और सामाजिकता 3. रूप, वस्तु और रचना-प्रक्रिया 4. अनुभूति की प्रामाणिकता और क्षणवाद बनाम ज्ञानात्मक संवेदना 5. लघुमानव और नयी कविता 6. लम्बी कविता बनाम छोटी कविता 7. नयी कविता : काव्य-विश्लेषण की पद्धति पर एक बहस 8. शीतयुद्ध और नयी कविता।उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

33. राय (सुनील कुमार)
वैश्वीकरण और समकालीन हिंदी उपन्यास में चित्रित श्रम (Labour) का स्वरूप।
निर्देशक : प्रो. कैलाश नारायण तिवारी
Th 23807

विषय सूची

1. वैश्वीकरण : स्वरूप एवं प्रभाव 2. साहित्य में श्रम की अभिव्यक्ति और सैद्धान्तिकी 3. हिंदी उपन्यास का विकास और श्रम 4. समकालीन उपन्यास, वैश्वीकरण और श्रम की बदलती हुई भूमिका 5. 1990 के बाद के हिंदी उपन्यास में अभिव्यक्त वैश्वीकरण, बाजार और श्रम का अंतर्संबंध। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

34. रेखा कुमारी
गाँधी और अंबेडकर की वैचारिकी के संदर्भ में हिंदी दलित साहित्य का अध्ययन।
निर्देशक : प्रो. गोपेश्वर सिंह
Th 24234

सारांश
(असत्यापित)

तीस के दशक में गाँधी और अंबेडकर भारत के राजनीतिक मंच पर आमने-सामने थे। दरअसल ब्रिटिश सरकार ने विधान सभाओं में दलितों के प्रतिनिधित्व को बढ़ाने के लिए प्रथक निर्वाचक मंडल का प्रस्ताव दिया था। गाँधी ने इस प्रस्ताव का विरोध किया। गाँधी के अनशन के आगे अंबेडकर को झुकना पड़ाए यरवदा जेल में पूना पैक्ट पर अंबेडकर और गाँधी का समझौता हुआ। ग्रामीण भारत जातिप्रथा और छुआछूत के मुद्दों पर गाँधी और अंबेडकर का रास्ता देखने में भले ही अलग-अलग लग सकता हैए लेकिन उद्देश्य एक था। अंबेडकरवादी विचारधारा से लैस हिंदी का दलित साहित्यए दलित स्वाभिमान और दलित मुक्ति को आगे लाने का कार्य करती है। दलित साहित्य ने इतिहास में हस्तक्षेप कर शोषण की गहरी पीड़ा के बीच जीवन के सूत्रों की पड़ताल की है। हिंदी के दलित साहित्य में गाँधी और अंबेडकर के विचार यत्र-तत्र देखे जा सकते हैं। दलित चिंतकों ने गाँधी और अंबेडकर के भारतीय राजनीति में दिए गए अवदान को अपने-अपने ढंग से विश्लेषित किया है। गोलमेज सम्मेलन से लेकर पूना पैक्ट तक दोनों हस्तियों के सफर को बुद्धिजीवियों ने अपने तरीके से व्याख्या की। दलित आलोचकों के दृष्टिकोण में जाति-प्रथा की जड़ में ही अस्पृश्यता रूपी कलंक छिपा होता है। इसलिए वे जाति-प्रथा के समूल नष्ट की मांग करते हैं। गाँधी से अंबेडकर का विरोध इसी बात पर था। अंबेडकर के आंदोलनों का ही प्रभाव था कि अंत में गाँधी को जाति-प्रथा के प्रति अपनी राय बदलनी पड़ी। उन्होंने न सिर्फ जाति-प्रथा के समाप्ति की घोषणा की बल्कि अंतर्जातीय विवाहों और अंतर्जातीय भोज का भी समर्थन किया। उपरोक्त संदर्भों को देखते हुए

यह कहा जा सकता है कि भारतीय समाज का हित दोनों चाहते थे। गाँधी और अंबेडकर के विचारों के सामंजस्य से ही आज के दलित आंदोलन को सही दशा और दिशा मिल सकती है।

विषय सूची

1. गाँधी और अम्बेडकर की वैचारिकी : एक पड़ताल 2. दलित अस्मिता विमर्श 3. हिन्दी दलित उपन्यासों में गाँधीवादी एवं अम्बेडकरवादी चिंतन 4. हिन्दी दलित आत्मकथाओं में गाँधी और अम्बेडकर की विचारधारा 5. गाँधीवाद और अम्बेडकरवाद के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी दलित कहानियों का विश्लेषण 6. गाँधी और अम्बेडकर की वैचारिकी के सन्दर्भ में हिन्दी दलित कविता और आलोचना का मूल्यांकन। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

35. वन्दना
हिंदी दलित आत्मकथाओं में स्त्री संबंधी दृष्टियों का अध्ययन।
निर्देशिका : डॉ. रजत रानी आर्य
Th 23822

सारांश
(असत्यापित)

हिंदी दलित आत्मकथाओं में स्त्री संबंधी दृष्टियों का अध्ययन के माध्यम से हिंदी दलित आत्मकथाओं मै स्त्री चरित्रों और उनकी समस्याओं को समझना है । दलित स्त्री अस्मिता जिस तिहरे शोषण के विमर्श को रखती है उसे शोध के माध्यम से समझने का प्रयास किया गया है ।

विषय सूची

1. हिन्दी दलित आत्मकथाओं की पृष्ठभूमि 2. हिन्दी दलित आत्मकथाओं में व्यक्त स्त्री संबंधी दृष्टियाँ 3. हिन्दी दलित आत्मकथाओं में व्यक्त स्त्री पर धार्मिक रूढ़ियों और अंधविश्वासों का प्रभाव 4. हिन्दी दलित आत्मकथाओं में अभिव्यक्तदलित स्त्री चेतना 5. हिन्दी दलित आत्मकथाओं में व्यक्त नवीन मूल्य संबंधी दृष्टियाँ 6. हिन्दी दलित आत्मकथाओं में लिंगभेदी भाषा संबंधी दृष्टि।उपसंहार।परिशिष्ट। संदर्भ ग्रंथ सूची।

36. विनोद आजाद
राष्ट्रीय आंदोलन और रामवृक्ष बेनीपुरी का साहित्य।
निर्देशक : डॉ. रामश्वर राय
Th 23802

सारांश
(असत्यापित)

श्री रामवृक्ष बेनीपुरी का उदय एक रचनाकार के रूप में उस काल-खंड में हुआ था, जब देश अंग्रेजों की पराधीनता, दमन व शोषण के साथ ईसाई धर्म-संस्कृति एवं पश्चिमीकरण के

विरूद्ध पुनर्जागरण तथा स्वराज का देशव्यापी लहर से आंदोलित हो रहा था। एक रचनाकार पत्रकार व स्वतंत्रता सैनानी के रूप में विभिन्न स्तरों पर साम्राज्यवाद से संघर्ष करने के साथ ही उसके सामाजिक आधार भारतीय सामंतवाद से भी संघर्ष किया। उनके लिए मुक्ति का अर्थ केवल साम्राज्यवाद से छुटकारा पाना नहीं था बल्कि-अपनी रचनाओं में सामंतवाद एवं पूँजीवादी व्यवस्था के नग्न यथार्थ को चिन्हित करते हैं।बेनीपुरी जी अपनी रचनाओं के माध्यम से ब्रिटिश साम्राज्यवाद की मुखालफत कर क्रांति का आह्वाहन कर रहे थे तो स्वतंत्रता आंदोलन के अंदर घुसे सामंती चरित्र के प्रति सतर्क भी थे। इनके सम्पूर्ण साहित्य में स्वाधीनता के लिए छटपटाती हुई भारतीय चेतना के स्पंदन, आक्रोश और प्रतिशोध के स्वर सुनाई देते हैं। बनीपुरी जी का साहित्य नये समाज के निर्माण के कोशिश का हिस्सा है। राजनीतिक सक्रियता उनके साहित्य को ठोस धरातल एवं जीवन संघर्षों से जोड़ता है। बेनीपुरी साहित्य में गांधीवाद, समाजवाद, मार्क्सवाद आदि मान्यताओं को प्रति वैचारिक द्वन्द्व देखने को मिलता है। भारत के स्वाधीनता आंदोलन के शिल्पकारों ने स्वाधीन भारत की परिकल्पना समाजवादी समाज के रूप में की थी। रामवृक्ष बेनीपुरी के जीवन और साहित्य में इस समाजवादी दर्शन का व्यापक प्रभाव पड़ा। समाज के दुख दर्द, हास्य-रूदन की अभिव्यक्ति में वे सदा सचेत रहते थे। उनकी रचनाएँ तात्कालीन सामंती परिवेश को चुनौती देता है। उन्होंने जो भी चरित्र गढ़े या जीवन से उठाए वे गुलामी की बेड़ियों को तोड़ने का संघर्ष करने वाले और आजादी के लिए तड़पने वाले थे। सिर्फ आजादी की तड़प ही नहीं, आजादी के साथ-साथ बराबरी या समता की तड़प भी उसके साहित्य की मूल प्रेरणा है।

विषय सूची

1. राष्ट्रीय आंदोलन और भारतीय समाज 2. राष्ट्रीय आंदोलन और हिन्दी साहित्य का स्वरूप 3. बेनीपुरी : एक युग का साक्षात्कार 4. बेनीपुरी साहित्य में राष्ट्रीय आंदोलन की अभिव्यक्ति 5. राष्ट्रीय आंदोलन से संबंधित हिन्दी साहित्य और बेनीपुरी साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन।उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

37. विनोद कुमार विद्यार्थी
भारतीय स्त्री जीवन की समस्याएँ और नासिरा शर्मा का कथा-साहित्य।
निर्देशिका : डॉ. रचना सिंह
Th 23818

सारांश
(असत्यापित)

भारतीय स्त्री जीवन की समस्याएँ हर युग में रही है। उस समस्या के निजात के लिए समय-समय पर स्त्रियाँ संघर्ष भी करती रही हैं। नासिरा शर्मा ठीक इसी संदर्भ में वैचारिक, मानसिक एवं भावात्मक धरातल पर स्त्री जीवन के लिए एक सार्थक संघर्ष करती दिखती हैं। आधी आबादी' के सच का बयान लेखिका नासिरा शर्मा के कथा-संसार में स्पष्ट दिखाई देता है।

स्त्री जीवन में विभिन्न स्तरों पर जो बदलाव हो रहा है, वह किस प्रकृति का बदलाव है और स्त्री मुक्ति के तथाकथित आह्वानों के पीछे वर्तमान बाजारवाद और ग्लैमरयुक्त भोगवादी संस्कृतियाँ कितनी सक्रिय हैं, इसका आकलन नासिरा शर्मा के कथा-साहित्य में उपस्थित है। नासिरा जी परिवेश बोध की संवेदना, बाह्य एवं आंतरिक विसंगतियों, अंतर्विरोधों, कटुताओं पारिवारिक-विघटन मूल्य संक्रमण, स्त्री-पुरुष संबंधों आदि को लेकर नये मानवीय क्षितिज की तलाश करती हुई नजर आती हैं। समकालीन कथा-साहित्य में लेखिका नासिरा शर्मा की उपस्थिति ने स्त्री-विमर्श के अनछुए पहलुओं का उद्घाटन किया है। उनके लेखन से यह साबित होता है कि वे प्रांत, भाषा और धर्म की सीमाओं में बँधी नहीं हैं। निष्कर्षतः नासिरा शर्मा का कथा साहित्य देशकाल के एक व्यापक दायरे में संचरण करता है। समाज और देश में स्त्री-पुरुष जीवन में बदलते मूल्यों से बनने वाले समाज को भीतर से पहचानने का प्रयत्न उनकी लेखनी की विशेषता है जो मानव मन के आंतरिक उत्स को छूती है।

विषय सूची

1. भारतीय स्त्री जीवन की अवधारणा अभिमत और समस्याएँ 2. नासिरा शर्मा के कथा-साहित्य मेंस्त्री जीवन यथार्थ और भारतीय स्त्री-जीवन की आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक समस्याएँ 3. नासिरा शर्मा के कथा-साहित्य मेंसमकालीन भारतीय स्त्री की जीवन समस्याएँ 4. नासिरा शर्मा के कथा-साहित्य में भारतीय स्त्री जीवन का नवीन मूल्यबोध 5. नासिरा शर्मा के कथा-साहित्य मेंस्त्री की भाषा संबंधी विशेषताएँ। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

38. विश्नोई (लक्ष्मी)
कृष्णा सोबती के उपन्यासों में पितृसत्ता के रूप।
निर्देशक : डॉ. राज भारद्वाज
Th 23832

सारांश
(असत्यापित)

पितृसत्ता समाज में असमानता की वह खाई है जो स्त्रियों द्वारा अभी तक लांघी नहीं जा सकी है। पितृसत्ता कोई प्राकृतिक देन नहीं है बल्कि मनुष्यों द्वारा बनायी गयी एक व्यवस्था है जहाँ सामान्यतः स्त्रियों पर पुरुष वर्चस्व की बात की जाती है। अनुमानतः यह माना जाता है कि प्रारंभ में मातृवंश था लेकिन लिंग भेद के कारण श्रम का बंटवारा हो गया और पुरुष कबीलों से बाहर शिकार आदि पर जाने लगे जबकि स्त्रियां को गर्भ धरण के कारण बच्चे पालने का भार सौंप दिया गया। यही से धीरे-धीरे स्त्रियां घर की चारदीवारी तक सीमित हो गई जहाँ से पितृसत्ता का प्रारंभ हुआ। वर्तमान समय में पितृसत्ता के स्वरूप को सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पक्षों में देखा जा सकता है। इस दौर में स्त्रियों को काफी स्पेश तो मिला लेकिन शोषण के नए रास्ते ईजाद कर लिए गए। स्त्रियाँ शिक्षा और आर्थिक स्वतंत्राता की चाह में घर की कैद से बाहर तो निकली। लेकिन घर से बाहर समाज में शारीरिक और

मानसिक शोषण का शिकार होने लगी। उनकी दैहिक सुन्दरता को अध्कि बल देकर वैश्विक आयाम प्रदान दिया गया जिससे वे किसी प्रोड्क्ट की भाँति ही बाजार का हिस्सा बन गयी। देह व्यापार का ध्ंध इस समय इतनी तेजी से बढ़ा है कि आर्थिक पफायदे के लिए लोगों ने औरतों का आयात-निर्यात चोरी से शुरू कर दिया। कई स्त्रियों ने मजबूरी बस ही सही लेकिन अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत करने के लिए इस व्यापार में शामिल हो गयी। यह पितृसत्ता का ही एक नया रूप है जहाँ सोशल मीडिया के आने से एक तरपफ तो स्त्रियों को स्वतंत्रा लेखन कर अपने भावों-विचारों को प्रकट करने का अवसर मिला तो दूसरी तरपफ सोशल वेबसाइट से उनकी तस्वीरों को चुराकर किसी बदले की भावना या छल करने के उद्देश्य से नग्न तस्वीरों में तब्दील कर वायरल कर दिया जाता है।

विषय सूची

1. भारतीय समाज में पितृसत्तात्मक व्यवस्था का स्वरूप और नारीवादी आंदोलन 2. भूमंडलीकरण, स्त्री और पितृसत्ता के नए रूप 3. कृष्णा सोबती के उपन्यासों में पितृसत्ता के रूप 4. कृष्णा सोबती के उपन्यासों में स्त्रियों का आत्मसंघर्ष एवं अस्मिता की तलाश 5. स्त्री भाषा का सवाल और कृष्णा सोबती के उपन्यासों में स्त्री पात्र।उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

39. शशि

लोकनाट्य के बदलते रूप और समकालीन प्रश्न (पांडवानी के संदर्भ में)।

निर्देशक : प्रो. चंदन कुमार

Th 23817

सारांश

(असत्यापित)

लोकनाट्य के बदलते रूप और समकालीन प्रश्न (पांडवानी के संदर्भ में)(not set)'पांडवानी' छत्तीसगढ़ की प्रसिद्ध लोककला है। छत्तीसगढ़ में इसे 'पंडवानी' भी कहते हैं। इस कला में महाभारत की कथा की नाटकीय प्रस्तुति की जाती है। 'पांडवानी' अर्थात् 'पांडवों की वाणी' या 'पांडवों की कथा' । इसकी दो शैलियाँ हैं- वेदमती और कापालिक। वेदमती शैली में सबलसिंह चैहान विरचित 'महाभारत' ग्रंथ से पद सुनाए जाते हैं, जबकि कापालिक शैली में पूर्णतः कपोल कल्पित कथाएँ होती हैं। कापालिक शैली में कलाकार की रचनात्मकता अपने चरम पर होती है। उसका व्यक्तित्व प्रस्तुति को बहुत गहरे प्रभावित करता है। पांडवानी की विकास यात्रा में कई पड़ाव रहे हैं। इसका उद्धभव प्रधान (परधान) और देवार समूह के लोगों द्वारा घर-घर जाकर भजन गाने की परम्परा से हुआ है। प्रधान गोंड राजाओं के चारण कवि बताए गए हैं। प्रधानों द्वारा गोंडवानी (गोंड राजाओं की प्रशस्ति में गाए जाने वाले पद) गायन की परम्परा भी मिलती है। पांडवानी इसी की अगली कड़ी है। इसके गायकों को बहुत लम्बे समय तक भजनहा कहा जाता था। भजन से लोकगाथा गायन और फिर लोकनाट्य के रूपरूप तक आने में पांडवानी ने लम्बी यात्रा तय की है। आज इसमें नृत्य, गीत, अभिनय,

संवाद सब का सुन्दर मेल है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता इसकी एकल प्रस्तुति है। एक ही व्यक्ति सभी पात्रों का अभिनय स्वयं कर लेता है। पांडवानी भारतीय परम्परा और संस्कृति के सबसे महत्वपूर्ण मूल्यबोध अनेकता में एकता का प्रतिबिम्ब है। भिन्न-भिन्न संस्कृतियों में महाभारत की कथा का प्रसार भारतीय की सांस्कृतिक एकता का अप्रतिम उदाहरण है।

विषय सूची

1. लोक, लोक संस्कृति व लोक साहित्य 2. लोकनाट्य : परिभाषा, तत्व एवं वैशिष्ट्य 3. छत्तीसगढ़ की लोकनाट्य विधाएँ 4. पांडवानी : विविध पक्ष 5. पांडवानी और समकालीन प्रश्न। उपसंहार। परिशिष्ट। संदर्भ ग्रंथ सूची।

40. शुक्ल (अभिषेक)
नव-उदारवादी दौर में विस्थापन की समस्या और हिन्दी उपन्यासों में उसकी अभिव्यक्ति।
निर्देशक : प्रो. कैलाश नारायण तिवारी
Th 23831

विषय सूची

1. नव-उदारवाद की अवधारणा 2. विस्थापन : विविध सन्दर्भ 3. हिन्दी उपन्यासों में विस्थापन की अभिव्यक्ति 4. हिन्दी उपन्यासों में नव-उदारवाद का प्रभावगत अध्ययन 5. हिन्दी उपन्यासों में नव-उदारवाद से उपजी विस्थापन की समस्याएँ।उपसंहार। ग्रंथानुक्रमणिका।

41. सन्तोष कुमारी
संजीव के कथा-साहित्य में लोक चेतना।
निर्देशिका : डॉ. जसपाली चौहान
Th 23837

सारांश
(असत्यापित)

प्रथम अध्याय 'लोक चेतना एवं कथा-साहित्य' में 'लोक' तथा 'चेतना' शब्दों के अर्थ, स्वरूप एवं परिभाषा तथा इनके परस्पर सम्बन्ध पर चर्चा की गई है। द्वितीय अध्याय 'संजीवः व्यक्ति और रचनाकार' के अन्तर्गत संजीव के जन्म, पारिवारिक पृष्ठभूमि, शिक्षा तथा साहित्यिक रचनाओं पर प्रकाश डाला गया है। तृतीय अध्याय 'संजीव के उपन्यास और लोक चेतना' में संजीव के उपन्यासों से लोक चेतना के संदर्भ प्रस्तुत किए हैं। इनके प्रमुख उपन्यास हैं - 'किसनगढ़ के अहेरी' , 'सावधान! नीचे आग है' , 'धार' , 'पाँव तले की दूब' , 'जंगल जहाँ शुरू होता है' , 'आकाशचंपा' , 'सूत्रधार' तथा 'फाँस' । उपरोक्त उपन्यासों में बाल- विवाह, जातीय भेदभाव, धार्मिक अंधविश्वास, भूत-प्रेत, ओझाई तथा तंत्र-मंत्र जैसी समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है। इनमें मनसा पूजा, बधना परब, सरहुल, भादू, करमा, सहोदरा मेला, बराह पूजा, लखराँव, पोला पर्व तथा गुढ़ी पाड़वा जैसे पर्वों का आनन्द भी

समाहित है। साँझा-पराती, जेह गीत, अबटन, द्वार पूजा, डोमकच जलुआ, कोहबर का जुआ, सूतक, जँतसार, सोरठी से कथा-साहित्य का लोक पक्ष सृदृढ़ हुआ है। चतुर्थ अध्याय 'संजीव की कहानियाँ और लोक चेतना' में संजीव की प्रमुख कहानियों में वर्णित लोक की परंपराओं, रहन-सहन, खान-पान, वेशभूषा, पर्वों, गीतों, नृत्यों तथा कथाओं के साक्ष्य तलाशने का प्रयास किया है। यथा- 'जसी बहू' में मनुवादी वर्ण व्यवस्था, पितृसत्तात्मकता, 'पुन्नी माटी' में पुण्य की मिट्टी से दुर्गा माँ की प्रतिमा का निर्माण, 'प्याज के छिलके' में अस्पृश्यता, बालविवाह, 'महामारी' में धार्मिक अंधविश्वास, झाड़-फूँक, 'टीस' में सपेरा जनजाति का जीवन, 'पिशाच' में सामन्तवादी मानसिकता, बंधुआ मजदूरी, 'प्रेतमुक्ति' में भूत-प्रेत, टोने-टोटका, तंत्र-मंत्र पर विश्वास, 'लाज-लिहाज में खाप पंचायतों की निर्णयात्मक भूमिका तथा 'हिमरेखा में बहुपतित्व प्रथा उल्लेखनीय हैं। पंचम अध्याय 'संजीव की कथा-भाषा' में संजीव की भाषा को आभिव्यक्तिक क्षमता, शब्द-संपदा, बिंबात्मकता, प्रतीकात्मकता, मुहावरे, लोकाक्तियों एवं सूक्तियों के प्रयोग, व्याकरणिकता तथा व्यंग्यपरकता आदि की कसौटी पर कसने का प्रयास मैंने किया है।

विषय सूची

1. लोक चेतना एवं कथा-साहित्य 2. संजीव : व्यक्ति और रचनाकार 3. संजीव के उपन्यास और लोक चेतना 4. संजीव की कहानियाँ और लोक चेतना 5. संजीव की कथा-भाषा।उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

42. साहनी (ओमप्रकाश)
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के निबंधों का शैली-वैज्ञानिक अध्ययन।
निर्देशक : डॉ. संजय गौतम
Th 23820

सारांश
(असत्यापित)

शोध-कार्य में शैलीविज्ञान की नवीनतम पद्धतियों का सहारा लेते हुए शुक्ल जी के निबंधों की भाषा का अध्ययन-विश्लेषण करते हुए उनके व्यक्तित्व को भी मूल्यांकित किया गया है। शैलीवैज्ञानिक आलोचना पद्धति मूलतः साहित्यिक कृति को केन्द्र में रखकर उसका विश्लेषण करती है तथा कृति में निहित भाषिक-सौन्दर्य को उजागर करती है। शैलीविज्ञान अपने चारो तत्वों-चयन, विचलन, समान्तरता एवं अप्रस्तुत-विधान के आधार पर भाषा की सभी इकाइयों के स्तर पर अध्ययन करती है। इसी आधार पर आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के तीनों प्रकार के निबंधों का अध्ययन विश्लेषण किया गया है। आचार्य शुक्ल के ये निबंध और उसकी भाषा, शैलीवैज्ञानिक दृष्टि से उत्कृष्ट कोटि की है। जैसा व्यक्तित्व आचार्य शुक्ल का रहा है और जैसे साहित्यिक विचार उनके रहे, उसकी पूर्ण प्रतीति हमें उनके इन निबंधों में होती है। उन्होंने अपने विषय एवं भावों की अभिव्यक्ति हेतु जिस प्रकार की भाषा-शैली को अपनाया

वह अन्यत्र दुर्लभ है। उनके शब्द चयन विशिष्ट एवं प्रभावशाली है उन्होंने आवश्यकता के अनुरूप न केवल विषयों का चयन किया अपितु नवीन शब्दों का सृजन भी किया है। शुक्ल जी के शब्द एवं पदक्रम विचलन उनके विषय को प्रभावशाली ढंग से स्पष्ट करते हुए पाठक के लिए उनके निबंधों को सरल, सहज एवं बोधगम्य बनाते हैं विषय को स्पष्टता प्रदान करने हेतु शुक्ल जी ने पदक्रम विचलन का सहारा लिया तथा बलाघात कर अपने भावों को अधिक सशक्त बनाया है। इसी प्रकार उनके निबंधों में समान्तरता के स्तर पर उनकी तुलनात्मक शैली का उत्कृष्ट स्वरूप देखा जा सकता है अप्रस्तुत विधान के माध्यम से उन्होंने ने केवल व्यंग्यात्मक-शैली का ही निर्वाह नहीं किया अपितु नवीन-बिम्बों को भी प्रस्तुत किया है। इस प्रकार उनकी भाषा में वे सभी मूलभूत विशेषताएँ उपस्थित है जो एक निबंध के लिए आवश्यक होते हैं और उनके निबंध उनकी स्वयं की स्थापना के अनुकूल रही है कि "निबंध गद्य की कसौटी है।

विषय सूची

1. शैली का स्वरूप-विश्लेषण 2. शैलीविज्ञान का स्वरूप-विश्लेषण 3. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल एवं निबंध-विधा 4. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी के सैद्धान्तिक निबंधों में शैलीवैज्ञानिक तत्व 5. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी के मनाविकार-सम्बन्धी निबंधों में शैलीवैज्ञानिक तत्व 6. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी के व्यवहारिक निबंधों में शैलीवैज्ञानिक तत्व।उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

43. सिंह (श्रद्धा)
बीसवीं सदी के अन्तिम दो दशकों की कहानियों में प्रेम का स्वरूप।
निर्देशक : प्रो. मोहन
Th 23827

विषय सूची

1. प्रेम : अर्थ और अवधारणा 2. नौवें और दसवें दशक का परिवेश 3. नौवें और दसवें दशक की कहानियों पर परिवेश का प्रभाव 4. नौवें दशक की कहानियों में प्रेम का चित्रण 5. दसवें दशक की कहानियों में प्रेम का चित्रण।उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

44. सिंह (सत्य प्रकाश)
संक्रमणकालीन देश-दशा और उसकी साहित्यिक अभिव्यक्ति के आलोक में विद्यापति का काव्य
निर्देशक : प्रो. गोपेश्वर सिंह
Th 23814

सारांश
(असत्यापित)

विद्यापति संक्रमणकालीन दौर के प्रतिनिधि कवि हैं और उनकी रचनाएँ युगीन परिवेश की जीवंत अभिव्यक्ति |उनकी 'कीर्तिलता ' और 'लिखनावली' में तद्युगीन सामाजिक परिस्थितियों

का यथार्थ अंकन है, 'पुरूष-परीक्षा' और 'भूपरिक्रमा'में मानवतावाद और नैतिकमूल्यों की स्थापना है|'गया पत्तलक 'और 'वर्ष कृत्य' में धार्मिक कर्मकांड और रीति -रिवाजों का वर्णन है|इन रचनाओं में तद्युगीन समाज में व्याप्त जातीय भेद -भाव ,छुआछूत,बालविवाह,अनमेल-विवाह,बहुविवाह,स्त्री -अशिक्षा,विधवाओं की दुर्दशा और सतीप्रथा जैसी अनेक सामाजिक कुरीतियों को उजागर किया गया है|युग-जीवन के अभिन्न अंग बन चुके धार्मिक कर्मकांडों ,तंत्र -मंत्र ,जादू -टोना और अंधविश्वासों को भी विद्यापति ने उद्घाटित किया है |उन्होंने सामाजिक संरचना के समस्त अवयवों - नगर ,गाँव ,खेत-खलिहान ,जातीय विधान ,दरबार ,युद्ध ,सेना,हाट,बाज़ार ,स्थापत्य ,पर्व ,त्यौहार सभी को इस ढंग से अपने साहित्य में लिपिबद्ध किया है कि समूचा समाज जीवंत हो उठा है|उनके साहित्य में तद्युगीन सांस्कृतिक टकराव की भी अभिव्यक्ति है ,आदान-प्रदान और सांस्कृतिक सहअस्तित्व की भी| तद्युगीन राजनैतिक उथल -पुथल पर भी उनकी पैनी नज़र है|उनका भाषा का विवेक अद्भुत् है|वे विषय के अनुरूप संस्कृत ,अवहट्ट और मैथिलि का चयन करते हैं|वे भाषा बदलाव की चेतना को पकड़ते हैं तथा भाषा को जातीय अस्मिता से जोड़नें पर बल देते हैं |दरअसल ,वे दरबारी कवि होते हुए भी जनकवि हैं|उन्होंने संक्रमणकालीन अराजकता, दरबारी व्यवस्था और आम जनता की दुरावस्था को अपनी रचनाओं में आबद्ध किया है| उनका साहित्य महज़ प्रेम की साधना नही, अपितु कमला, वाग्मती ,गंडक का निर्बाध प्रवाह है,मिथिला की उर्वर भूमि और बगीचों की महक उसमें विद्यमान है|आम जन के संघर्षो और उल्लास की समूची कथा है- विद्यापति का साहित्यलोक| उनके साहित्य में केवल दरबारी वैभव-विलास नहीं बल्कि अपने समस्त उपादानो के साथ उपस्थित समाज का अंकन है|

विषय सूची

1. संक्रमण : पृष्ठभूमि और प्रक्रिया 2. संक्रमणकालीन देश-दशा : संघात और परिवर्तन 3. विरुद्धों का सामंजस्य : विद्यापति और उनका सर्जन 4. संक्रमणकालीन देश-दशा की साहित्यिक अभिव्यक्ति : बोध एवं भाषा के विविध आयाम 5. विद्यापति के साहित्य में संक्रमणकालीन देश-दशा की अभिव्यक्ति। उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

M.Phil Dissertations

45. कु. ज्योति
कुँवर नारायण कृत कुमारजीव का आलोचनातमक अध्ययन।
निर्देशक : डॉ. प्रेम सिंह

46.. कुमारी शीतल
दीनदयाल गिरि की सामाजिक चेतना।
निर्देशिका : प्रो. सुधा सिंह

47. जायसवाल (आशीष)
मीरा कांत के उपन्यास एक कोई था कहीं नहीं-सा : संवेदना और शिल्प।
निर्देशिका : प्रो. कुसुमलता मलिक

48. जीनगर (गोपाल)
माताप्रसाद के नाटकों में सामाजिक समस्या।
निर्देशक : प्रो. श्यौराज सिंह बेचैन

49. त्रिपाठी (अभिप्राय)
खड़ीबोली आन्दोलन और राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द का भाषा चिंतन।
निर्देशक : प्रो. मोहन

50. तिवारी (प्रदीप)
दिनमान पत्रिका की सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना (1980-1982)।
निर्देशिका : प्रो. कुमुद शर्मा

51. तिवारी (प्राची)
नंगातलाई गाँव : आलोचनात्मक अध्ययन।
निर्देशिका : डॉ. अल्पना मिश्र

52. तिवारी (रवि)
रहीम और वृंद की काव्यभाषा का तुलनात्मक अध्ययन।
निर्देशक : डॉ. पूरनचंद टण्डन

53. पटेल (अभीप्सा)
हिंदी नवगीत का शिल्प-विधान।
निर्देशिका : डॉ. मंजु मुकुल कांबले

54. मीणा (अर्चना)
मंझन कृत मधुमालती में निहित प्रेम तत्त्व का अध्ययन।
निर्देशक : प्रो. गोपेश्वर सिंह

55. मीणा (बीना)
स्त्री द्वारा सामंती मूल्यों का प्रतिकार व संघर्ष संदर्भ मीरा का काव्य।
निर्देशिका : डॉ. स्नेह लता नेगी

56. राजा कुमार
टोकरी में दिगन्त थेरी गाथा : 2014 का आलोचनात्मक अध्ययन।
निर्देशक : प्रो. निरंजन कुमार

57. रूबी
दोहन उपन्यास में दहेज समस्या और लेखक की संवेदना।
निर्देशक : प्रो. श्यौराज सिंह

58. संचना
मीरा की भक्ति साधना में सगुण-निर्गुण द्वंद्व।
निर्देशक : डॉ. रामनारायण पटेल

59. सिंह (अभिजीत)
भक्तिकाल केंद्रित आलोचना का परिदृश्य (संदर्भ : रामचंद्र शुक्ल लिखित गोस्वामी तुलसीदास) ।
निर्देशिका : प्रो. सुधा सिंह

60. हक (एजाजुल)
अनुराग कश्यप निर्देशित हिन्दी सिनेमा का अध्ययन : संदर्भ गैंग्स ऑफ वासेपुर, गुलाल और मुक्काबाज।
निर्देशक : प्रो. अपूर्वानन्द